पद्मा ग्रहदुरई
बट उपन्यास
कल्पना का नृत्य
प्रेम सकुनी

பத்மா கிரகதுரை
NOVELS
கற்பனைகளின் களிநடனம்
காதல் சகுனி

पद्मा गिरधुराई
लिखना
प्रेम शगुन

अंतर्वस्तु

1
2
3
4
5
6
7
8
9
10
11
12
13
14
15
-समापन-

1

उसके गाल फड़क रहे थे। पंखुड़ियाँ सिमट गईं। उसकी आँखों में प्रेम झलक रहा था। मुड़ी हुई पंखुड़ियाँ धीरे-धीरे पास खड़ी स्त्री के चेहरे की ओर बढ़ीं, जिससे झिझक, संकोच और उससे परे एक जुनून प्रकट हुआ। दोनों होंठ एक-दूसरे से चिपक गए। पंखुड़ियों का चिपकना बिल्ली के चूहे को पकड़ने की गति से हुआ।

यह सब देख रही तुलसी को उल्टी आने जैसा महसूस हुआ। उसने अपना सिर घुमाकर बगल में देखा तो पाया कि रंजनी और प्रिया, जो उसके दोनों ओर बैठी थीं, उसे बड़ी-बड़ी आँखों से घूर रही थीं, पलकें भी नहीं झपका पा रही थीं। तुलसी ने दोनों हाथों से अगल-बगल बैठे लोगों की जांघों पर ज़ोरदार थप्पड़ मारे।

"ये क्या बकवास है? क्या तुम इसे इस तरह देख रहे हो?"

प्रिया ने झटपट रिमोट उठाया और टीवी पर चल रहे दृश्य को रोक दिया। "अरे बेवकूफ! कितना बढ़िया दृश्य था! तुमने बिल्कुल सही समय पर सब कुछ खराब कर दिया!"

रंजनी ने उसके हाथ से रिमोट छीन लिया। "तुमने क्यों रोक दिया? बस थोड़ा आगे बढ़ाओ और फिर से चलने दो।"

"अगर मैं फिर से सबसे पहले वहाँ पहुँच जाऊँ तो क्या होगा? मैं ऐसा नहीं कर सकता! मैं जा रहा हूँ।"

उन्होंने तुलसी के दोनों हाथ पकड़कर उसे वापस बिठा दिया। "तुम्हें यह तस्वीर पूरी करके जाना होगा।"

"क्या ये कोई फिल्म है? इतने अश्लील लोग फिल्म कैसे बना सकते हैं! और आप बस बैठकर इसे देख रहे हैं!"

"ठीक है, चलो उस बुढ़िया को एक उपहार देते हैं।"

"अरे, क्या तुम्हें लगता है कि मैं कोई बूढ़ी औरत हूँ जो थोंग पहनकर फिल्में देखती है?"

"हाँ, अगर मैं एक दिन आपसे जींस पहनने को कहूँ, तो आप हज़ार बार सोचेंगे! यह वही शर्ट है जिसे आप हमेशा देखते हैं। हमसे यह उम्मीद करना गलती थी कि आप सभी को इतनी भावुक रोमांटिक फिल्म पसंद आएगी।"
इसमें प्रेम का क्या नाम दर्शाया जाए? प्रेम का अर्थ है विनम्रता। केवल आँखें बोलनी चाहिए, केवल हृदय धड़कना चाहिए, और आँखें हृदय की धड़कन को व्यक्त करनी चाहिए। जैसा कि इसमें दर्शाया गया है, शरीर को नहीं धड़कना चाहिए और हाथों को नहीं बोलना चाहिए।
"अरे, ये आदमी तो 1950 के दशक से बाहर ही नहीं निकला है!"
"अरे, आप के.पी. सुंदरम्बल के युग की फिल्में देखने के लायक हैं।"
"ठीक है, बस करो। मैं रोमांटिक फिल्मों या प्यार के खिलाफ नहीं हूं। मैं बस इतना कह रहा हूं कि प्यार की भी एक सीमा होनी चाहिए।"
"सिर्फ एक चुंबन से इस प्यार ने अपना नियंत्रण कैसे खो दिया?"
बहस करने वाली अपनी सहेली को तुलसी ने घूरकर देखा। "यह सब एक व्यापारिक चाल है। अगर हम इस तरह के दृश्य दिखाएंगे तभी तुम्हारे जैसे युवा सिनेमाघर में फिल्म देखने आएंगे।"
"क्या आपको पता था कि यह दृश्य तुलसी थिएटर में दिखाई जा रही फिल्म में नहीं था? यह अब केवल ओडिती में ही दिखाया जा रहा है।"
"ठीक है, चलिए इस फिल्म की विशेषताओं का पता लगाते हैं।"
"कितनी शर्म की बात है! हमने तो सिर्फ यही दृश्य देखने के लिए फिल्म देखना शुरू किया था। सिर्फ यही नहीं, ऐसे दो-तीन और दृश्य हैं..." उसने अपनी सहेली का मुंह ढकते हुए कहा।
"बस करो, फिल्म का यही तो मकसद है! मैं अब और दृश्य देखने के लिए तैयार नहीं हूँ।"
"आप जाइए, माँ, हम बाकी फिल्म आराम से देख सकते हैं," रंजनी ने हाथ उठाकर झुकते हुए उसे दूर धकेल दिया। प्रिया ने उस रुके हुए दृश्य को थोड़ा आगे बढ़ाया, अपनी आँखें चौड़ी कीं और ऐसे बैठ गई जैसे वह अपना सिर टीवी में घुसाने वाली हो।
टीवी बंद हो गया और रंजनी उसके बगल में बैठ गई, तुलसी ने हल्के से उसके सिर पर थपथपाया और चली गई।

"मैं कल ऑफिस में रहूंगी," तुलसी के दोस्तों को अलविदा कहते हुए 'हम्म' कहने का भी समय नहीं मिला। स्क्रीन पर हीरो फिर से हीरोइन के पास आया और उसकी मैगज़ीन खोलने लगा, लेकिन तुलसी ने झट से अपनी नज़रें हटा लीं और बाहर चली गई।

उसे ऐसी फिल्में बनाने वालों को रोकने और उन्हें गोली मारने की तीव्र इच्छा हुई। ये कैसा घिनौना प्यार है! जो फिल्म शुरू में प्यार को एक सुंदर कविता की तरह पेश करती थी, अचानक उसमें ऐसे अलौकिक दृश्य आ गए। स्कूटी चला रही महिला का चेहरा गुस्से से लाल हो गया था।

पौने घंटे की यात्रा के बाद वह अपने गंतव्य पर पहुँच गई। नीचे की बत्तियाँ बंद थीं और अँधेरा था। उसने यह सोचकर कि उसकी चाची सो रही होगी, बगल की सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपरी मंजिल पर चली गई।

जब उसने दरवाजा खोला, तो सामने एक बड़ा हॉल था और उसके दोनों ओर दो कमरे थे। उसने अपने दाहिनी ओर वाला कमरा खोला और अंदर चली गई। वह हिस्सा बिल्कुल सही था, जिसमें एक छोटा हॉल, बेडरूम और किचन था। चेन्नई में ऐसी जगह मिलना वाकई बहुत बड़ी बात थी।

चेन्नई में नौकरी मिलने पर तुलसी को महिला छात्रावास में रहने में काफी कठिनाई हुई। उसी दौरान मंदिर में उनकी मुलाकात सुजाता से हुई। मंदिर में खंभे से टेक लगाकर बैठी सुजाता के कंधे पर हाथ रखकर उन्होंने सहानुभूति से पूछा, "क्या हुआ आंटी, आपको क्या हुआ है?" सुजाता कुछ बोल नहीं पाईं और बस पानी पीती रहीं।

वह तुरंत सामने वाली दुकान पर गई और पानी की एक बोतल खरीद लाई। यह देखकर कि उसे उसके पर्स से गोली निकालने में परेशानी हो रही है, उसने खुद रक्तचाप की गोली निकाली और उसे मुंह में डालने में उसकी मदद की।

दस मिनट बाद, वह शांत हो गया और उसने सुजाता को धन्यवाद दिया, और दोनों के बीच उम्र के अंतर को पार करते हुए एक गहरी दोस्ती पनप उठी। बातचीत के दौरान, तुलसी ने उसे बताया कि वह रहने के लिए जगह ढूंढ रही है, और सुजाता ने उसे अपने घर की छत पर रहने के लिए आमंत्रित किया। सुजाता ने बताया कि उसका बेटा और बेटी विदेश में बस गए हैं और पति की मृत्यु के बाद वह अकेली रह गई है।

तुलसी तुरंत मान गई क्योंकि उसका घर उसके दफ्तर के बगल में ही था। यह एक आलीशान अपार्टमेंट था जो उसने अपने बेटे और बेटी के लिए बनवाया था, जो कभी भी आ-जा सकते थे। पिछले तीन सालों से न तो उसका बेटा आया था और न ही बेटी, और जब सुजाता ने वहाँ से खेद व्यक्त करते हुए बात की, तब भी तुलसी उदास थी।

"चिंता मत करो, आंटी, हम एक-दूसरे का साथ देंगे," उसने उसे गले लगाते हुए कहा। कुछ ही दिनों में, दोनों के बीच एक ऐसा स्नेह विकसित हो गया जो दोस्ती से कहीं आगे निकल गया।

पता नहीं तुलसी आंटी ने ओवन में डोसा स्टोन रखकर बनाया हुआ डोसा खाया या नहीं। रंजनी और प्रिया मुझे अच्छी फिल्म देखने के लिए बार-बार परेशान कर रही थीं। वे घर गईं और फिल्म देखी, इस तरह समय बीत गया। खाना खाने के बाद उन्होंने थोड़ी देर ऑफिस का काम किया और फिर रात साढ़े दस बजे सो गईं।

उसे पता नहीं था कि वह कितनी देर सोई थी, तभी अचानक उसने दरवाजे पर किसी के दस्तक देने की आवाज़ सुनी... या यूँ कहें कि धमाके जैसी आवाज़। उसे हैरानी हुई कि घर में कौन घुसा है और उसने चौंककर दरवाजा खोला। दरवाजे पर एक आदमी लड़खड़ाता हुआ खड़ा था, पूरी तरह नशे में धुत।

वह बंद घर में कैसे घुस सकता था? तुलसी का दिमाग काम करने से इनकार कर रहा था।

उसका चेहरा घनी, झबरा दाढ़ी से ढका हुआ था और उसके बाल बिखरे हुए थे, जिससे उसका चेहरा छिपा हुआ था। जब उसने उसे दरवाजा खोलते देखा, तो उसने अपनी दोनों बाहें फैला दीं और उसकी ओर बढ़ते हुए कहा, "हाय, डार्लिंग।"

तुलसी, जो 'पहिया' चिल्लाते हुए पीछे-पीछे आई थी, उसे कुछ देर पहले अपने दोस्तों के साथ देखी गई फिल्म के नायक की याद आ गई। क्योंकि उस फिल्म में नायक के हाव-भाव बिल्कुल इसके जैसे थे।

यानी, इवान उस फिल्म को देखता है और खुद को उस हीरो के रूप में कल्पना करता है। तो, मेरा अनुमान सही निकला। यह सोचकर कि ऐसी सभी फिल्में युवाओं को इस तरह भ्रष्ट करने के लिए बनाई जाती हैं, वह "आंटी" चिल्लाते हुए उसके पास से भागी और नीचे चली गई।

ऊपर के कमरे का दरवाजा अंदर से बंद था और ऊपर-नीचे सभी कुंडी लगी हुई थीं। जब उसने जल्दी से नीचे का दरवाजा खोला, तो वह नीचे कूदी और ऊपर की कुंडी को नीचे खींचा, लेकिन उसने देखा कि कुंडी अचानक वापस अपनी जगह पर लग गई थी।

तुलसी के हाथ कांप रहे थे, उसने पास खड़े उसकी ओर मुड़कर देखा। "सारी...सारी...क्या तुम...क्या तुम कृष्ण हो?" उसने उलझन में पूछा।

उसने भयभीत होकर उसकी ओर देखा, यह सोचकर कि उसे मेरा नाम कैसे पता चला। उसने सिर हिलाकर कहा, "दरवाजा खोलो, मुझे आंटी के पास जाना है।"

"नहीं, आंटी, वे दवाइयों के असर से सो रहे हैं। हमें इस समय उन्हें परेशान नहीं करना चाहिए। यह अनजाने में हुई गलती है। कृपया अपने कमरे में जाइए," उसने कांपती हुई आवाज़ में अपना माथा दबाते हुए कहा।

तुलसी ने खुद सोचा कि सुजाता को नींद से जगा दे। तो क्या यही वो रिश्तेदार है जिसके बारे में आंटी बात कर रही थीं? लेकिन उसने कहा था कि वो एक हफ्ते में वापस आएगा। फिर अचानक आधी रात को, और इतनी नशे की हालत में क्यों आ गया?

“आज थोड़ी सी पार्टी ही काफी मजेदार है...”, उसने मुंह बनाते हुए कहा, मानो वह शराब पी रहा हो। “डरिए मत, कृष्णा, आप जाकर सो जाइए। मैंने जगह बदल ली है और दरवाजा खटखटाया है। मुझे आपसे मिलने दीजिए, आंटी।”

"मैंने सोचा..." "सारी" बार-बार माफी मांगता रहा, और लड़खड़ाते कदमों से वह बाईं ओर के कमरे में गया, दरवाजा खोला और खुद को अंदर बंद कर लिया।

सुजाता ने ऊपर की मंजिल पर दो अलग-अलग अपार्टमेंट बनवाए थे ताकि उसके बेटे और बेटी को एक ही जगह मिल सके। "मेरे एक रिश्तेदार ने बताया है कि वह आपके अपार्टमेंट के सामने वाले अपार्टमेंट में रुकेंगे। वह सिर्फ कुछ दिनों के लिए ही रुकेंगे। क्या आपको कोई आपत्ति है?" सुजाता ने दो दिन पहले उनसे पूछा था।

तुलसी को एहसास हुआ कि इतने कम किराए पर इतनी बड़ी जगह मिलना एक बड़ी बात है, इसलिए वह उनके अनुरोध को ठुकरा नहीं सकी। उसे यह भी पूरा भरोसा था कि आंटी घर में

केवल अच्छे चरित्र वाले व्यक्ति को ही आने देंगी, इसलिए उसने कहा, "आंटी, उन्हें उदारता दिखाने दीजिए।"
लेकिन उसका चरित्र कैसा है? इस तरह शराब पीने के बाद...? असमंजस में पड़कर वह अपने कमरे में गई, सारे दरवाजे बंद कर लिए और एक तरह के डर से बिस्तर पर गिर पड़ी।
मुझे एहसास हुआ कि आंटी ने उसे अपने बारे में बहुत कुछ बताया होगा, क्योंकि उसका फोन...
कृष्णा तुलसी! ज्यादातर लोग उन्हें तुलसी ही कहते हैं।
लेकिन सुजाता ने कहा, "मुझे आपको कृष्ण कहकर बुलाना अच्छा लगता है। मैं आपको इसी नाम से पुकारूंगी।" और देखिए, वह भी मुझे इसी नाम से बुला रहे हैं! बिलकुल आंटी की तरह...
वह अपने दोनों हाथ खोलकर कृष्णातुलसी की आँखों में डालने को तैयार था, जिसने अपनी आँखें कसकर बंद कर रखी थीं, क्योंकि उसके नाम पुकारने की आवाज़ से उसके भीतर एक अजीब सी सिहरन दौड़ गई थी। कृष्णातुलसी ने अपनी आँखें खोलीं और उस फिल्म के रोमांटिक दृश्य उसके मन में कौंध गए।
“क्या आपको पता है कि ये फिल्म आजकल युवाओं में कितनी लोकप्रिय है? हर कोई इस फिल्म को पागलों की तरह पांच-छह बार देख रहा है,” प्रिया ने कहा और उसके दिल में एक टीस उठी। ऐसा लग रहा था जैसे उनकी बात सच हो। जब इस तरह के सनकी लोग हैं जो पदावती की वो फिल्म देखते हैं और हीरो का अनुसरण करते हैं, तो ऐसी फिल्मों का चलना आश्चर्य की बात क्यों है?
कृष्णातुलसी काफी देर तक करवटें बदलती रही, उसे नींद नहीं आ रही थी और उसका मन मिली-जुली सोच से भरा हुआ था।
वह सुबह देर से उठी और जब अरकप्पराक्का से बाहर निकली तो उसने देखा कि सामने का दरवाजा बंद है, और उसने राहत की सांस ली। स्कूटी को स्टैंड से उतारते समय उसने खिड़की में सुजाता का चेहरा देखा।
"कृष्णा, तुम कल रात घर कब आए थे? मुझे लगता है कि मैं अच्छी तरह सोया था।"

“नौ बज गए हैं, आंटी। काम खत्म करने के बाद मैं अपने दोस्तों के कमरे में भी गई थी।” नगाथी स्कूटी पर खड़ी हुई, उसे स्टार्ट किया और बोली, “आंटी, आपके रिश्तेदार आ गए हैं। जाकर देखिए क्या हो रहा है।” सुजाता दंग रह गई।

"अचु कौन है?"

"पता नहीं ये कैसी कमीनी है। आधी रात को ठोकर खाकर मेरे कमरे का दरवाजा खटखटाया। अभी तक जागा नहीं है। देखो क्या कर दिया।" उसने संतुष्टि से आंटी को स्कूटर दिया और उसे जाने दिया।

"फिल्म देखने के बाद हमारी आंखें लाल हो गईं। तुम्हारी आंखें लाल क्यों हैं?" कृष्णाथुलसी ने दफ्तर में रंजनी को डांटते हुए कहा।

"कंद्रवी की उस तस्वीर के बारे में सोचकर मुझे नींद नहीं आ रही है।"

"हे प्रिया, मैं तुलसी के लिए 'नाइट फुल्ला' फिल्म के बारे में सोच रहा था।"

"हम्म...क्या तुम वो तस्वीर भूल सकती हो? ये कैसी तस्वीर है, तुलसी!"

"अगर अब से तुम उस फिल्म के बारे में बात करोगे, तो मैं इंसान नहीं रहूंगा। बस अपना काम ठीक से करो।"

"अब तुम बस एक इंसान हो..! तुम ऐसे व्यवहार कर रहे हो जैसे बिना प्रेम के जन्मा कोई देवता हो! मैं पूछता हूँ, तुम अपने माता-पिता के प्रेम के बिना क्यों पैदा हुए?"

कृष्णातुलसी ने अपनी घूमने वाली कुर्सी उसकी ओर खींची और उसके सिर पर पटक दी।

"अरे, बकवास मत करो! काम देखो। एचपी के आने का समय हो गया है।"

"चलो ना," रंजनी ने धीरे से कहा, और अचानक तीनों महिलाएं शांत हो गईं और कुछ हद तक ध्यान देने लगीं। उन्होंने अपनी निगाहें कंप्यूटर स्क्रीन पर टिका दीं।

एचपी ने अपना काम रोके बिना, हल्की इत्र की खुशबू वाले व्यक्ति को "सुप्रभात" कहे बिना ही आगे बढ़ गया।

यह उनका नाम या कंपनी में उनका पद नहीं है। एचपी का मतलब है हाई प्रेशर, उनके तीन दोस्तों ने उन्हें यही उपनाम दिया है। यह एक स्टार्टअप कंपनी है जो चेन्नई की मशहूर आईटी कंपनियों से मुकाबला करने के लिए तेजी से आगे बढ़ रही है। निरंजन के चेहरे पर हमेशा तनाव के भाव रहते हैं, चाहे वह एक बड़ी कंपनी के एमडी के रूप में उन पर पड़ने वाले

कार्यभार का प्रभाव हो, जो कड़ी प्रतिस्पर्धा में अपनी अलग पहचान बनाने की कोशिश कर रही है।

"क्या रात की पार्टी में शराब कुछ ज़्यादा ही पी ली गई थी?" निरंजन ने कृष्णतुलसी से चौंककर पूछा, जो काम से जुड़ी जानकारी लेने अपने कमरे में गया हुआ था।

शाम को, काम के पहले दिन के बाद, तीन दोस्तों ने अपने स्कूटर सड़क के किनारे खड़ी कर दिए और कृष्णाथुलसी को अपने कमरे में फिल्म देखने के लिए ले जा रहे थे। उसी समय, निरंजन की कार उनके पास से गुजरी।

कार में बैठे कृष्णातुलसी को जब यह एहसास हुआ कि उन्होंने उनके बारे में गलत अनुमान लगाया था, तो उनका चेहरा लाल हो गया और उन्होंने चिंता से उनकी ओर देखा।

"आप इतनी गंभीरता से क्या पूछ रहे हैं, महोदय?"

निरंजन ने कंधे उचकाते हुए कहा, "यहाँ तो यह सब बहुत सामान्य है। डरने की कोई बात नहीं है।"

"माफ़ कीजिए महोदय, मैं उन अति सुंदर मॉडल लड़कियों जैसी नहीं हूँ।"

"हम्म...मुझे पता है। तुम्हारा गृहनगर तो कमाल का बार है। मुझे याद है जब मैं यहाँ काम करने आया था तब तुम जाग रहे थे। लेकिन अगर इन दो सालों में तुम बिल्कुल नहीं बदले हो...तो मुझे यकीन नहीं हो रहा।"

कृष्णा तुलसी का दिल उबल रहा था। कहीं न कहीं, कुछ महिलाओं की गलतियाँ उसके जैसे पुरुषों को यह सोचने पर मजबूर कर देती हैं कि सभी महिलाएँ ऐसी ही होती हैं!

3

"इसे जाने दो, तुलसी, इन पुरुषों को हमारे बारे में इस तरह बुरा सोचकर संतुष्टि मिलती है," प्रिया कृष्णा ने तुलसी को आश्वस्त किया।

"यह ईर्ष्या है कि हम उनसे प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं," रंजनी ने कहा, जिससे तीनों हंस पड़े।

निरंजन के सवाल पर हंसते हुए और बात टालते हुए भी, कृष्णातुलसी का दिल अभी भी उबल रहा था। अगर उसकी आंखें थोड़ी लाल थीं तो वह इस तरह कैसे पूछ सकती थी? उसके घर की सभी औरतें इसी तरह पीती थीं... वह इस बारे में सोचने से भी हिचकिचाई और अपने विचारों को रोक लिया।

"यह एच.ओ. मेरे साथ एक दिन रहेगा, और वह मेरे साथ कुछ भी करेगा," उसकी सहेलियों ने उसे अजीब नजरों से देखा।
"अरे, वो हमारी कंपनी के एमडी हैं। वो तुम्हारे साथ इतना बुरा बर्ताव कैसे कर सकते हैं?"
"किसी तरह...? लेकिन वह तो गाय है..." यही बात कृष्णतुलसी के मन में उभर रही थी।
यही सोचते हुए, जैसे ही वह अपने घर की ओर जाने वाली गली के मोड़ पर मुड़ी, उसे उस आदमी की याद आ गई जिसने पहली रात उसके दरवाजे पर दस्तक दी थी। वे दोनों इतने असमंजस में थे कि उन्हें पता नहीं था कि दरवाजा कौन खोलेगा, इसलिए मौका मिलते ही वे महिलाओं की नकल करने लगे। ऊबकर उसने दरवाजा खोला और अंदर चली गई।
उसे याद आया कि उसने उस सुबह सुजाता आंटी के पास पानी की गाड़ी छोड़ी थी। सीढ़ियों पर कदम रखते ही वह चौंक गई, यह सोचकर कि वह घर छोड़कर चला गया होगा, आंटी ऐसी अनैतिकता कभी बर्दाश्त नहीं करेंगी।
घर के अंदर से एक पुरुष के ज़ोर से हंसने की आवाज़ सुनाई दी। किसी कारणवश, ऐसा लग रहा था कि यह उसी की हंसी है, तो फिर आंटी उसे अभी भी घर में क्यों रखे हुए हैं?
ऊपर जाकर फ्रेश होने और फिर नीचे आने का इरादा बदलकर आंटी ने दरवाजा खटखटाया। "दरवाजा खुला है। अंदर आ जाओ," सुजाता की आवाज सुनकर उन्होंने दरवाजा खोल दिया। अंदर उन्होंने देखा कि वह दरवाजे के सामने रखे सोफे पर पालथी मारकर बैठा है। फिल्म में हीरो का भी यही अंदाज था। फिल्मों का कितना बड़ा शौकीन है वो! जब उसने उसे देखा, तो वह मुस्कुराया और बोला, "नमस्ते," जबकि कृष्णातुलसी ने मासूमियत से अपनी आँखें खोलीं।
"ये कौन हैं, आंटी?"
सुजाता उसकी हैरानी पर हंस पड़ी।
मैंने तुमसे कहा था। मेरा अपना बेटा। उसका नाम अश्वथ है।
"तुमने कहा था कि तुम्हारा रिश्ता एक हफ्ते में खत्म हो जाएगा। तुमने कभी नहीं कहा था कि वह आधी रात को दरवाजा खटखटाएगा और 'डार्लिंग' कहकर पुकारेगा।"
सुजाता शर्मिंदा होकर जाग उठी, और उसने चमकती आँखों से उसकी ओर देखा।

"क्या समस्या है, कृष्ण, तुम सात दिन पहले से आए हो?" कृष्ण तुलसी ने लापरवाही से पूछते हुए गुस्से से कहा।
मुझे मेरे पूरे नाम से पुकारें।
"मैं इतना लंबा नाम नहीं ले सकता। तुम्हारी चाची तुम्हें इसी नाम से बुलाती हैं। मैं भी तुम्हें इसी नाम से बुलाऊंगा। कृष्णा एक सुंदर नाम है..." अपने भाषण के अंत में, उन्होंने पलकें झपकाती हुई कृष्णा तुलसी की ओर हाथ बढ़ाया।
यह उस फिल्म के हीरो का भी एक खास अंदाज़ है। फिल्म में कई दृश्यों में जब वह हीरोइन से बात करता है, तो वह इसी तरह आँख मारता है। वह चंचल लहजे में बात करता है। अश्वथ के प्रति कृष्णातुलसी की नफरत बढ़ती गई।
"मौसी, आधी रात को बगल वाले कमरे का दरवाजा खटखटाने वाली नशे में धुत महिला को गिरफ्तार करने आए आदमी को तो सजा नहीं मिलनी चाहिए?" मल्लुक्कू ने पूछा, "आप उसे अभी भी घर में कैसे रख सकती हैं?"
"मैंने कल सुजा से उसकी गलती के लिए माफी मांगी थी। आपने मुझे ऊपर वाले कमरे में रहने की चाबी दी थी। मैं उलझन में थी और गलती से उसके दरवाजे पर दस्तक दे दी।"
कृष्णातुलसी ने बीच में ही टोकते हुए कहा, "तुम पूरी तरह से नशे में थे।"
"हाँ," उसने बिना किसी झिझक के सहमति जताई। "नहीं तो मैं सीधे अपने कमरे में चला जाता! जब एक महिला ने दरवाजा खोला, तो मुझे सूजा के अलावा कोई और महिला याद नहीं आई। मैंने सूजा के बारे में सोचा और कहा, 'डार्लिंग'।"
कृष्णातुलसी ने भौंहें चढ़ाते हुए पूछा, "यह सुजा कौन है?"
अश्वथ हँसा और बोला, "पुघ," जिसके बाद कमरे में एक मिनट के लिए सन्नाटा छा गया। उसने सुजाता की ओर देखकर मुस्कुराया।
"क्या ऐसा ही नहीं है, वह बचपन से ही मुझे डार्लिंग कहकर बुलाता रहा है?"
कृष्णा तुलसी को अपना सिर पीटने का मन कर रहा था। ये कैसा रिश्ता है!
"सुजा डार्लिंग कृष्णा हमसे ईर्ष्या करती हुई प्रतीत हो रही है," अश्वथ ने फिर पलकें झपकाईं।
उसने उसे गौर से देखा, जो अभी भी अपने होठों के नीचे कुछ बुदबुदा रही थी, और उसने अपनी पलकें और भी तेज़ी से झपकाईं।

"प्रिय, अगर कृष्ण के सामने तुम्हारी आँखों में धूल का एक कण भी गिर जाए...हे भगवान! मेरी आँखें तो निकल ही जाएँगी!"
"क्या?" सुजाता ने हैरानी से उसकी तरफ देखा, "देखो, मैंने इस तरह पलकें झपकाईं, क्या तुम कह रहे हो कि मैं तुम्हें आँख मारने पर मजबूर करूँगी?" उसने एक छोटे बच्चे की तरह उंगली उसकी तरफ करके शिकायत की।
"कृष्णा, अचु बहुत अच्छा लड़का है, क्या मैं उसे तुम्हारे साथ ऊपर रहने के लिए कहूँ?"
हालांकि वह जानती थी कि सुजाता झूठ नहीं बोलेगी, फिर भी कृष्णातुलसी को उस राक्षस से आमने-सामने लड़ने का मन हुआ।
उसने अपने फोन पर मैसेज की आवाज़ सुनी। उसके सामने बैठा अश्वथ के चेहरे पर तीखा भाव था। उसके ऑफिस ऐप से नौकरी का मैसेज आया था। निरंजन ने कहा था कि उसे आज रात तक काम पूरा करके भेज देना चाहिए।
"ठीक है, मुझे रात को आराम मत करने देना," उसने ऊबते हुए उठते हुए कहा और अश्वत की तीखी निगाहों पर भौंहें चढ़ा दीं।
"आप किस कंपनी के लिए काम करते है?"
ओह, अब मैं तुम्हें बता रही हूँ, वापस काम पर जाओ, उसने मन ही मन सोचा, "आंटी, मुझे काम करना है। मैं ऊपर जा रही हूँ। आज रात मैं आपके लिए डोसा बनाऊँगी। आपको कुछ भी पकाने की ज़रूरत नहीं है," यह कहकर वह चली गई।
जैसे ही उसने दहलीज पार की, उसने सुजाता को अश्वथ को उस कंपनी का नाम बताते हुए सुना जिसमें वह काम करती थी।
तीन घंटे तक लैपटॉप के सामने बिना हिले-डुले बैठे रहने और निरंजन द्वारा दिए गए काम पर चर्चा और उसे अपडेट करने के बाद, कृष्णातुलसी खड़ी हुई और घड़ी में नौ बज रहे थे।
श्श... मैं भूल गई थी, आंटी रात के 8 बजे खाना खाती हैं, गोलियां लेती हैं और सो जाती हैं! वह थोड़ी सी अपराधबोध के साथ जल्दी से नीचे चली गई।
उसकी उम्मीद के विपरीत, नीचे की बत्ती जल रही थी, "माफ़ कीजिए आंटी, मैं इसे काम पर भूल गई थी। मैं डोसे का घोल साथ लाई हूँ। टमाटर की चटनी भी है। हम यहीं दो डोसे बना सकते हैं और हम दोनों खा सकते हैं।"

जैसा उसे बताया गया था, वह घर में दाखिल हुई और नई खुशबू सूंघते हुए एक पल के लिए रुक गई। "अरे, चाची, आप क्या पका रही हैं? ये खुशबू तो सूंघिए!" उसने पूछा, फिर रसोई में गई और देखा कि अश्वथ चूल्हे के सामने लकड़ी का चम्मच लिए खड़ा है।
"नमस्ते! चलिए खाना खाते हैं," उसने कहा। बुल्गा रोटी ओवन में पक रही थी। "बुल्गा रोटी और देसी चिकन के मसाले का मेल लाजवाब है। बहुत स्वादिष्ट है।" कृष्णातुलसी ने चिकन और रोटी से भरी थाली आगे बढ़ाते हुए उस आदमी को हैरानी से देखा।
"क्या आप को खाना पकाना आता है?"
"इसे चखकर देखो और मुझे बताओ," उसने रोटी का अगला टुकड़ा सुजाता को दिया, जो चूल्हे के पास छोटी सी खाने की मेज पर बैठी थी।
"तुम इस तरह बैठकर खाना नहीं खाओगी," सुजाता ने कहा, क्योंकि थाली में रखे खाने की तेज़ गंध उसकी नाक में चुभ रही थी। कृष्णातुलसी, जो अभी-अभी बैठी थी और रोटी का एक टुकड़ा मुंह में डाला था, खाने का स्वाद आते ही अपने आप आंखें बंद कर लीं।
चूल्हे को देखते हुए खड़े अश्वथ ने अनजाने में कहा, "स्वादिष्ट।"
"आपने मुझे इतना स्वादिष्ट खाना बनाना क्यों सिखाया?" सुजाता ने पूछा। "सुजा, जिन्हें स्वादिष्ट खाना पसंद है, उन्हें खाना बनाना सीख लेना चाहिए। मैंने खुद खाना बनाना इसलिए शुरू किया क्योंकि मेरे लिए खाना बनाने वाला कोई नहीं था।" यह कहते हुए वह उनके पास ही खाने के लिए बैठ गया।
"तुम्हारी माँ..." कृष्णातुलसी ने मुँह में खाना भरे हुए पूछा।
"नहीं, माँ," सुजाता ने उस व्यक्ति को डांटा जिसने तुरंत जवाब दिया, "नहीं।"
"मैं तुम्हें यह बताने आया हूँ कि तुम मेरे साथ नहीं हो। क्या हुआ है, प्रिय?" उसने धीमी आवाज़ में कहा और अपना बायाँ हाथ सुजाता के कंधे पर रखकर उसे गले लगा लिया।
"क्या तुम अपनी माँ से झगड़ा करके यहाँ आए हो?" कृष्णातुलसी ने हल्की सी आह भरते हुए पूछा। उसने ऊपर उसकी ओर देखा, होंठ सिकोड़े और धीरे से सीटी बजाई।
"सुजा प्रिय, हमारे कृष्ण में तुम्हें कितना ज्ञान दिखाई देता है?" एक शरारती आँख मारते हुए।
कृष्णातुलसी उठ खड़ी हुई। "मैं ऊपर जा रही हूँ, चाची।"

जैसे ही वह दरवाजा बंद करने वाली थी, क्योंकि वह उस आदमी की तरफ देखना नहीं चाहती थी जो उसके पीछे ऊपर आया था, तभी अश्वथ ने सामने वाले कमरे से आवाज़ दी। "कृष्णा, मैं इतना भी बुरा लड़का नहीं हूँ, है ना?"
उसने अविश्वास भरी निगाहों से उसकी ओर देखा, "क्या मैंने सब कुछ रसोई में रख दिया है? मुझे थोड़ा सा बताओ," और उसने अपनी आँखें बंद कर लीं, वह उसी तरह मुस्कुराने के लिए उत्सुक थी जैसे उसने पूछा था।
"क्या सभी रसोइये अच्छे हैं?"
"तुम... कई औरतें इस तरह खाना बनाकर खुद को अच्छा इंसान बता रही हैं। आजकल हम मर्द भी उनका अनुसरण करने लगे हैं। बताओ, क्या मैं कम से कम इतना अच्छा हूँ?" उसने अपनी तर्जनी उंगली के नाखून का आकार दिखाते हुए पूछा।
"खाना बनाना न जानने वाली सभी महिलाएं बुरी नहीं होतीं, और खाना बनाना जानने वाले सभी पुरुष अच्छे नहीं होते," कृष्णातुलसी ने दरवाजा बंद करते हुए कहा।
"अरे कृष्ण! मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा। फिर से कहो," अश्वथ की चीख दरवाजे से टकराकर वापस उसी तक पहुंची।

4

"मुझे घर से काम देकर वे मुझे मार रहे हैं क्योंकि मुझे नहीं लगता कि ऑफिस में काम करना काफी है," प्रिया और रंजनी विलाप करती हैं, और कृष्णा तुलसी भी इसी भावना को साझा करती हैं।
जो कंपनियां पहले 24 घंटे घर से काम करने की सुविधा देती थीं, उन्होंने अब इसी चलन के अनुरूप ऑफिस के काम के अलावा घर से काम करने की सुविधा भी देना शुरू कर दिया है।
कर्मचारी रात को सो नहीं पा रहे हैं, उन्हें समझ नहीं आ रहा कि इससे कैसे बचा जाए।
"मैंने रात ग्यारह बजे तक काम किया और मुझे खाने की भी इच्छा नहीं हुई, इसलिए मैं सो गई," रंजनी ने कहा। "मुझे भूख भी नहीं लग रही है, बस लैपटॉप की स्क्रीन देखती जा रही हूँ।"

कृष्णा तुलसी को पहली रात खाए भोजन का स्वाद याद आ गया। "तुलसी, क्या तुमने कल खाना खाया था?" प्रिया ने उसके कंधे पर थपथपाते हुए पूछा।
"एंग... क्या खाना बनाने वाले सभी पुरुष अच्छे होते हैं?" उसने कहा। उसकी सहेलियों ने उसे हैरानी से देखा।
"क्या आप किसी ऐसी चीज के बारे में बात कर रहे हैं जिसका मुझसे कोई लेना-देना नहीं है?"
"इसलिए, मैंने सोचा कि अगर कोई हमारे लिए खाना बना दे जब हम इस तरह काम करने के बाद थक जाते हैं तो अच्छा रहेगा।"
"ओह, क्या आपने कभी कल्पना की है कि अगर आपका प्रेमी आपके लिए इस तरह से खाना बनाए तो कैसा लगेगा?"
"प्रेमी कौन होता है? मेरे पास तो ऐसा कुछ है ही नहीं," कृष्णातुलसी को एक टीस महसूस हुई।
"खैर, कोई प्रेमी नहीं, पति।"
"नहीं... नहीं, पति नहीं," उसने घबराते हुए इनकार किया।
"हे भगवान! उसे क्या हो गया?" रंजनी ने प्रिया का माथा पकड़कर कहा, "माँ तुलसी! हम आपको अच्छी तरह जानते हैं। आप वो हैं जो फिल्मों में भी प्रेमियों को होंठों पर चुंबन करते हुए बर्दाश्त नहीं कर सकतीं। हमने कभी सोचा भी नहीं था कि आप किसी से प्यार करेंगी।"
"इसीलिए मैंने कहा कि मैं पति हूं। वह इस बात को सुनकर भी बहुत खुश हुई।"
"कुछ मत कहो। मेरा कोई बॉयफ्रेंड नहीं है... पति नहीं है..."
"ओह, क्या आप श्रीमती तुलसी के नौकर बनने का इरादा रखते हैं?"
"अरे, क्या मैंने तुमसे कहा था कि शादी मत करो?" उसने उन दोनों के सिर पर एक-एक पिन लगा दी।
"तुम्हारे इतने जिद्दी होने से हमें और क्या समझना चाहिए?"
"देखो, पहले मेरी बात समझ लो। मैं प्यार के खिलाफ नहीं हूँ। मैं शादी के खिलाफ नहीं हूँ। मैं बस इतना कह रहा हूँ कि हर चीज़ की एक सीमा होती है। हमें गरिमा के साथ प्यार करना चाहिए और शांतिपूर्वक शादी करनी चाहिए।"
"अरे वाह, तुम्हारा प्यार तो काली मिर्च से सने सेब जितना मीठा है," रंजनी ने कहा, जिससे बाकी दोनों हंस पड़े।

निरंजन हंसते हुए लोगों को घूरते हुए वहां से गुजरा।
"अरे, बरुदा, तुमने पूरी रात काम किया और अब जाकर थोड़ा आराम किया है, देखो कैसे घूर रही हो। क्या बात है, आज तो एचपी का दिन है?" रंजनी ने उसे कसकर पकड़े हुए लोगों को धक्का देने का नाटक किया, जबकि उसकी दोनों सहेलियाँ उसे देखती रहीं...
"ओह, तुम मुझे रोकोगे नहीं? ठीक है, चलो काम देखते हैं। सुबह उस प्रेशर वॉशर को लेकर इतना हंगामा क्यों मचा था!" वह एकदम से होमवर्क कर रही स्कूली छात्रा की तरह हो गई और कीबोर्ड पर टाइप करने लगी।
बाकी दो लोग दफ्तर में दाखिल हुए, उन्हें कीबोर्ड की टैपिंग की आवाज के अलावा कोई और आवाज सुनाई नहीं दी। लगभग तीन घंटे बाद दोपहर के भोजन का समय हो गया और सभी ने स्क्रीन से नजरें हटा लीं।
प्रिया ने प्लेट में गिरी धुएँ की गंध वाली बिरयानी को घृणा से देखा। "ये कैसा खाना है? तुम हमेशा एक ही चीज़ कैसे खा सकती हो?"
"तीन महीने पहले जब तुमने इस ऑफिस में काम शुरू किया था, तब जो बिरयानी तुम्हें मिली थी, उसे तुमने क्यों निगल लिया? क्या तुम भूल गए हो?"
"बिरयानी सबकी पसंदीदा डिश है, इसलिए अगर आप इसे हर दिन बनाते हैं..."
"हम्म... यह रस मीठा और स्वादिष्ट तो है। लेकिन अगर इसे रोज़ खिलाओगे तो क्या ऊब नहीं जाओगे?" कृष्णा तुलसी ने अपनी थाली से दही-चावल उठाते हुए कहा।
"वे हमें गायों की तरह काम करवाने के लिए ये सारे स्वादिष्ट भोजन मुफ्त में खिलाते हैं। सिर्फ तीन महीनों में ही हमें इन खानों का स्वाद नापसंद होने लगता है। ऊपर से, इस तरह खाना और बैठे-बैठे काम करना हमें बीमार भी कर देता है," प्रिया ने आह भरी और अपने थोड़े सूजे हुए शरीर को देखा।
"पांच महीनों में मेरा वजन चार किलो बढ़ गया है। उसे देखो, वो दही और चावल के सिवा कुछ नहीं खा रही है। वो हमारी तरह ज्यादा नहीं खाती," रंजनी ने थोड़ी ईर्ष्या से कृष्णा तुलसी की तरफ देखा।
"हम एक ही जगह पर स्थिर रहकर काम करते हैं। हमें ऐसा भोजन करना चाहिए जो हमारे लिए उपयुक्त हो। इसीलिए मैं हमेशा इतना सादा भोजन करता हूँ।"

"धत् तेरे की, ये सारी आईटी कंपनियां बाहर से तो बहुत आलीशान दिखती हैं। अंदर जाकर ही पता चलता है कि इनमें क्या खामियां हैं। इसका क्या फायदा जब बाहर दिन है या रात, ये भी पता ही नहीं चलता?"

रंजनी ने बहुत शिकायतें कीं, फिर भी वह उस उबाऊ बिरयानी से आगे बढ़कर मीठे दही-चावल की ओर रुख नहीं कर सकी। उसकी थाली में सिर्फ बिरयानी और पास्ता ही था।

"तुम चुप कैसे रह सकती हो?" कृष्णा ने आह भरते हुए पास्ता अपने मुंह में ठूंस लिया।

शायद यहाँ सादा भोजन करने की वजह से ही मुझे रात में घर पर इतनी भूख लगती है, और इसीलिए मैंने इतनी रोटी और चिकन खाया। कृष्णा तुलसी का सुझाव था कि पहले दिन रात के खाने में कुछ और बनाया जाए।

उसने मुझसे कॉन्टैक्ट सर्टिफिकेट मांगा क्योंकि उसने बहुत ज्यादा खा लिया था। अगर उसने प्लेट को दूर धकेल दिया होता, तो वह चुप ही रहता।

यादें खो गईं। दही-चावल के साथ परोसा गया अनार का दाना उसके गले में अटक गया। उसने पानी गटक लिया। "क्या नज़ारा था! जब नायिका उसके पास से गुज़रती है, तो वह सीधे उसकी ओर देखता है और पलकें झपकाता है! मैं सिर्फ़ उस दृश्य के लिए फ़िल्म दो बार और देखूँगी।"

रंजनी और प्रिया की बातचीत सुनकर उसने उन दोनों को घूरकर देखा। "एंडी, क्या तुम दोनों को वो फिल्म अभी भी याद है? क्या तुम्हें पता है कि कितने लोग उस हीरो की नकल कर रहे हैं और वो फिल्म युवा पीढ़ी को कितना भ्रष्ट कर रही है?" उसने कहा।

"उस फिल्म के दृश्य अब सोशल मीडिया पर ट्रेंड कर रहे हैं। रील, शॉर्ट वीडियो, उस फिल्म के सभी दृश्य। हम्म... आपने किसे इस तरह नकल करते देखा?"

"वो...एक पड़ोसी है, और फिर मुझे ऐसा लगता है कि हमारा एचपी उस हीरो को भी सूट में लेकर आ रहा है।"

"अरे सच में, क्या हमारे इस अति-दबाव वाले व्यक्ति ने वह फिल्म देखी है? उसे देखने के बाद भी, क्या वह फिल्म में इतना दबाव दिखा रहा होगा?"

"इसीलिए इस तरह की सभी फिल्में तनाव कम करने का काम करती हैं। क्या आप जानते हैं कि उस फिल्म को देखने के बाद दो दिनों तक मेरा दिमाग कितना शांत रहा?"

"सिर्फ कुछ भी मत कहो। तुम यह सब अपने मन में ही गढ़ रहे हो।"
"अरे, तुमने तो अभी तक फिल्म देखी भी नहीं है। बात मत करो।" उन्होंने खाना खत्म किया और काम पर लौट गए।
उस शाम जब कृष्णाथुलासी घर लौटी, तो घर की छत पर उस फिल्म का एक गाना बज रहा था जिससे उसे बेहद नफरत थी।
आंटी टीवी पर कोई गेम शो या टॉक शो देखती थीं। वे उसे बहुत धीमी आवाज़ में चलाते थे, और अश्वथ हैरानी से खिड़की से बाहर देखता, फिल्म का गाना टीवी पर बजने देता और उसके सामने खड़ा होकर हीरो की तरह अभिनय करता।
कृष्णा तुलसी, कोमल,

5

कृष्णाथुलसी, प्रिया, रंजनी और उनकी टीम के सदस्य मुरली और धनुष कोडिंग में अचानक आई एक त्रुटि को ठीक करने के लिए संघर्ष कर रहे थे। रात के दस बज चुके थे। कोडिंग का काम जो दो घंटे पहले पूरा हो जाना चाहिए था, वह इसी तरह टलता चला आ रहा था।
समस्या यह है कि उन पांचों का दिमाग साफ नहीं हुआ है, और वे कल टीम लीडर नीलवन्नन को जवाब नहीं दे पाएंगे। "मेरे पास एक विचार है..." कृष्णातुलसी अभी बोलना ही शुरू कर रही थी कि उसके कमरे के दरवाजे पर दस्तक हुई।
धनुष ने निराशा व्यक्त करते हुए कहा, "चाहे किसी भी तरह का कचरा हो, कोट्टू तुलसी। हम ऐसी स्थिति में हैं जहां हमें सब कुछ बिना छोड़े उठाना होगा।"
उसने समूह चर्चा में शामिल सभी लोगों को इंतजार करने के लिए कहा और दरवाजा खोल दिया। अश्वथ बाहर खड़ा था और उसके होंठों के सिरे पर सिगरेट लटक रही थी।
"क्या मुझे माचिस मिल सकती है?" उसने बेपरवाही से सवाल पूछने वाले पर गुस्से से देखा।
"कृष्णा, मेरी एकमात्र चिंता दूर होना है, मेरा दिमाग काम नहीं कर रहा है। अगर मैं सिगरेट जला लूँ तो थोड़ा आराम मिलेगा। मुझे नहीं पता मैंने लाइटर कहाँ रख दिया है। मैंने तुम्हें माचिस दी थी।"

"तुम्हें पता नहीं..." उसने अपना हाथ उसके चेहरे के सामने फैला दिया। "तुम रात के दस बजे एक ऐसे कमरे का दरवाजा खटखटा रहे हो जहाँ सिर्फ एक लड़की है और माचिस मांग रहे हो। क्या तुम सच में इंसान हो? या कोई और प्राणी हो?"
अश्वथ ने अपने मुंह से सिगरेट निकाली और कहा, "सिगरेट सिर्फ मर्द ही पीते हैं! तो मैं मर्द हूं। ठीक है, जाओ और माचिस ले आओ," उसने अधिकारपूर्ण स्वर में कहा।
"तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई? तुम सबकी..." उसने अपने दोनों हाथ उसकी गर्दन की ओर बढ़ाए। अपने हाथों को ध्यान से देख रहा वह व्यक्ति अचानक आश्चर्यचकित हो गया। "अरे, कृष्णा, ये नेल पॉलिश का रंग कितना सुंदर है! तुमने इसे कहाँ से खरीदा?"
कृष्णातुलसी को ऐसा लगा जैसे वह उन्हीं हाथों से अपना सिर पीट ले जिन्होंने उसका गला घोंटा था। तुम कौन हो! तुम ऐसे क्यों हो? जब उसने घृणा से यह पूछने के लिए अपना मुंह खोला, तो उसके लैपटॉप से बीप की आवाज़ आई।
"तुलसी कहाँ गई?" मुरली चिल्लाया।
कमरे में झाँकते हुए अश्वथ ने कहा, "क्या आपकी भी कोई मीटिंग है? इस समय तक? क्या इसी तरह उन्हें बिना समय सीमा के नौकरियाँ मिलती हैं? आप किस कंपनी में काम करते हैं?"
"मैं कल अपने बॉस को बता दूंगा, कृपया अभी चले जाइए।"
"कृष्णा, मैंने माचिस मांगी थी! कृपया, अगर आप सिगरेट पी लें, तो मेरा दिमाग काम करने लगेगा।" अश्वथ वहीं खड़ा रहा, कृष्णा तुलसी ने उसके सिर पर एक घूंसा मारा, चूल्हे के पास गई, माचिस लाई, उसे अश्वथ पर फेंका और दरवाजा जोर से बंद कर दिया।
"बहुत-बहुत धन्यवाद, कृष्णा," दरवाजे के दूसरी तरफ से उसकी आवाज थोड़ी भारी सुनाई दी।
"ये कौन है? ये तो किसी सज्जन की आवाज़ लग रही थी," रंजनी ने कहा। "मैं यहीं रुकती हूँ। मेरे पास एक विचार है। चलो इस कोड को उलट-पुलट कर देखते हैं।" कृष्णतुलसी ने कहा, और बाकी सबने सहमति जताते हुए तेज़ी से टाइप करना शुरू कर दिया।
दस मिनट के भीतर ही त्रुटि दूर हो गई, और सभी ने अपने हाथ ऊपर उठाकर और एक साथ "होई" चिल्लाकर अपनी जीत का जश्न मनाया, फिर अपने लैपटॉप बंद कर दिए।

कृष्णातुलसी, जो स्नान करके अपने उबलते दिमाग को शांत करने के लिए बिस्तर पर लेट गई थी, ने अपनी आँखें खोलीं। अश्वथ उसकी बंद पलकों के बीच खड़ा था और उसने माचिस मांगी।

"अरे कमीने, मैंने तुझे सिगरेट जलाने के लिए माचिस दी थी!" कृष्णातुलसी ने सोते हुए मन ही मन बड़बड़ाया।

अगली सुबह जब अश्वथ नीचे आया तो सुजाता वहां खड़ी थी और दोनों हाथ कमर पर रखे उसे घूर रही थी।

"उस दिन तो तुमने पार्टी किसी तरह निकाल ली, लेकिन आज क्या तुम्हारा दिमाग सिर्फ सिगरेट पीने से ही काम करेगा?" उसने आंखें घुमाईं और डांटते हुए कहा।

उनके पीछे, कृष्णातुलसी धूल रहित सोफे का कवर उठा रही थी और उसे फैला रही थी।

वह एक अनजान पिता की तरह वहाँ खड़ा रहता और सुजाता से विनम्रतापूर्वक पूछता, "क्या हुआ, प्यारी, क्या तुम इतनी नाराज़ हो?" उसने धीरे से पूछा, सुजाता की कमर को गले लगाने की कोशिश करते हुए, लेकिन सुजाता ने उसे दूर धकेल दिया। "उसे दूर मत धकेलो! मैं तुमसे बहुत बातें करना चाहता हूँ।"

"ओह, गाड़ी में बैठो, सन्यान, मुझे बिना फूल दिए मत छोड़ो," उसने वदिवेलु के अंदाज़ में कहा। कृष्णातुलसी ने आश्चर्य से सुजाता की ओर देखा। जैसा उसने सोचा था, उसका चेहरा सचमुच दमक रहा था।

सुजाता का पसंदीदा कॉमेडियन वादिवेलु है। इसलिए वह आंटी के बारे में सब कुछ जानता है। वह उन्हें खुश करने के लिए तरह-तरह के तरीके सोचता रहता है!

"अगर तुम मुझे तुम्हें छोड़कर जाने के लिए कहोगी, तो मेरे पास और कौन है, सुजा डार्लिंग? मैं कहाँ जाऊँगी? जिसने तुम्हारे पास पनाह मांगी है, उसे मत छोड़ो, डार्लिंग," सुजाता ने अभिनेता के तीखे भाषण की नकल करते हुए और अश्वथ के शब्दों को बोलते हुए थिलाकम का मजाक उड़ाते हुए जोर से हंस पड़ी।

"पोकिरीपायल," उन्होंने उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा। "तुम कृष्ण के पास माचिस की डिब्बी क्यों मांगने गए थे?"

"ये कैसा सवाल है, डार्लिंग? मुझे इसकी ज़रूरत थी। मैंने सोचा था कि वो इसे अपनी जेब से निकालकर मुझे दिखाएगी, लेकिन वो मुझे आधे घंटे से अपराधी कोठरी में बंद करके मुझसे जिरह कर रही है।"
"तुम्हारा मतलब क्या है, इसे अपनी जेब से निकालो? तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई ऐसा सोचने की...?"
"अरे, मैंने तो सिर्फ माचिस मांगी थी, कृष्णा? तुम गुस्सा हो रहे हो, जैसे मैंने तुमसे वो बीयर मांग ली हो जो तुमने मुझसे पी थी?" अश्वथ ने डर के मारे अपने हाथ ऊपर उठा लिए।
"आंटी, मुझे बताइए कि मैं आपके रिश्ते के बारे में ठीक से कैसे बात करूं। वह बिना सोचे-समझे इधर-उधर की बातें कर रहा है, उसे पता ही नहीं कि वह किससे बात कर रहा है।"
"हां, अचु, कृष्णा के बारे में ऐसा मत सोचो! वह एक साफ-सुथरी लड़की है, उसमें ऐसी कोई आदत नहीं है," सुजाता ने अपनी ठुड्डी सहलाते हुए और उसे ऊपर से नीचे तक देखते हुए कहा।
मुझे विश्वास नहीं हो रहा, आजकल इस शहर में ऐसी महिलाएं कहां हैं जो धूम्रपान या बीयर नहीं पीतीं?
"मैं उस तरह की औरत नहीं हूँ। आंटी, कृपया मुझे बता दीजिए कि अब से मेरे साथ इस तरह का व्यवहार न करें।"
"तुम मुझे यह सीधे बता सकती हो, कृष्णा," उसने मुस्कुराते हुए उसके सामने खड़े होकर, हाथ जोड़कर और उसे तिरछी नजरों से देखते हुए कहा।
यह... यह नज़र... वही थी जो उस फिल्म के हीरो ने दिखाई थी। अश्वथ की हर हरकत ने कृष्णातुलसी के भीतर सुलग रहे गुस्से को और भड़का दिया।
"मैं ऐसे व्यक्ति को हल्के में नहीं लेता जो हमेशा रहस्यमयी किरदारों के साथ जीता है।"
"मुझे समझ नहीं आ रहा, मुझे स्पष्टीकरण चाहिए," अश्वथ ने स्पष्ट असहमति के स्वर में कहा।

6

"फिल्म के संवाद तो किसी घटिया मजाक जैसे हैं! और उस घटिया फिल्म के हीरो की नकल किसी और ने की है। आंटी, मैं इन सब बातों को एक ही व्यक्ति कैसे मान सकती हूँ?"

“वो हमेशा से ऐसे ही रहे हैं। बचपन से ही उन्हें सिनेमा का बहुत शौक रहा है...” अश्वथ ने कृष्णतुलसी की ओर देखा, जिन्होंने सुजाता को बोलते हुए रोकने के लिए हाथ उठाया। “आप किस फिल्म की बात कर रही हैं?”

"प्रेम एक संकेत है, क्या कोई प्रेम और संकेत को नाम के साथ जोड़ेगा? अगर किसी अज्ञानी व्यक्ति ने यह तस्वीर ली है, तो बहुत सारे अज्ञानी लोग इसे देख रहे हैं और इसका जश्न मना रहे हैं। ऐसे लोगों को देखना दुखद है..."

गुस्से से उबल रही और चीख रही कृष्णातुलसी के कंधे पर सुजाता ने धीरे से हाथ रखा। "कृष्ण, क्या तुम मेरी बात सुनोगे?"

"मौसी, बस चुपचाप बैठो, तुमने वो फिल्म नहीं देखी है। अगर देखी होती तो तुम्हें उसमें मौजूद सारी बुरी बातें पता होतीं। देखो मौसी, हीरो और हीरोइन अपने प्यार का इज़हार करने के लिए छह-सात साल के लड़के का इस्तेमाल कर रहे हैं। कितनी बुरी बात है। फिल्म में इसे बहुत बढ़ा-चढ़ाकर दिखाया गया है। मैं ये सब कैसे स्वीकार कर सकती हूँ?"

अश्वथ ने दोनों हाथ कमर पर रखकर कृष्णा तुलसी से नज़रें हटाकर सुजाता की ओर घुमाईं। सुजाता शर्म से अपना सिर खुजलाने लगी। "तुम्हारा मतलब है, कृष्णा ऐसी किसी भी चीज़ का वीडियो नहीं बनाता जो असल दुनिया में न घटित होती हो?"

कृष्णाथुलसी को अब समझ आया कि सुजाता फिल्म के समर्थन में बोल रही थी। "आंटी, क्या आप उस फिल्म का समर्थन करती हैं? क्या आपने फिल्म देखी है?"

"नहीं, मुझे इसे बाद में देखना होगा। मैं बस इसे देखने के बारे में सोच रहा हूँ।"

"नहीं, नहीं, इसे मत देखो, मैं खुद इसे नहीं देख सका और बीच में ही उठ गया। अगर मुझे उस निर्देशक को पकड़ने का मौका मिल जाए जिसने इतनी घटिया फिल्म बनाई है, तो मैं उसके गाल पर चार थप्पड़ मारूंगा और कहूंगा, 'चुप रहो, चुप रहो'।"

अश्वथ आकर कृष्णतुलसी के सामने खड़ा हो गया, जो बातें कर रही थी। "चुप रहो, कृष्ण।"

"क्या?"

मैंने कहा, 'अपनी इच्छा पूरी करो'

कृष्णातुलसी ने मानो सहमति जताते हुए एक बार अपनी दोनों आँखें खोलीं और उलझन भरी नज़रों से उसकी ओर देखा। "मैं कृष्ण हूँ, उस फिल्म 'अश्वत्थामन' का निर्देशक। मैं वही

भाग्यशाली व्यक्ति हूँ जिसे आप इतनी बेसब्री से दंडित करना चाहते हैं। हम्म... शुरू कीजिए," उसने ठुड्डी ऊपर उठाते हुए कहा।
कृष्णातुलसी वहीं स्तब्ध खड़ी रह गई। उसे अपने कानों में पड़े शब्दों पर विश्वास नहीं हो रहा था। उसे हल्का सा चक्कर आ रहा था। उसने घबराकर सुजाता की ओर देखा और सिर हिलाकर हां कहा।
"चाची ने मुझे यह पहले क्यों नहीं बताया? चली जाओ चाची, तुमने मुझे बेवकूफ बनाया! मैं तुमसे नफरत करती हूँ!" उसने ऊँची आवाज़ में आरोप लगाया और झट से ऊपर की ओर भाग गई। उसने अश्वत की पुकार, कृष्णा, अनसुनी कर दी।
—---------
जब कृष्णातुलसी की नींद खुली और उसने आंखें खोलीं, तो कमरा अंधेरा था। उसने अपना फोन उठाया और समय देखा, सुबह के एक बज रहे थे। कृष्णातुलसी अभी भी सदमे से उबर नहीं पाई थी। वह बिस्तर पर लेटी हुई थी, बिना किसी कारण के हल्की-हल्की सांस फूल रही थी, लेकिन किसी तरह उसे नींद आ गई थी।
लेकिन मेरा दिमाग, जो पूरी तरह से सोया नहीं था, मुझे आधी रात को जगा दिया। मुझे कमरे के बाहर एक बहुत धीमी आवाज़ सुनाई दी। मैंने दरवाज़ा थोड़ा सा खोला और देखा कि अश्वथ कमरे के अंदर किसी से बात कर रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे वे कोई कहानी सुना रहे हों।
कृष्णाथुलासी ने दरवाजा पटक दिया। अश्वथ... अश्वत्थमन। उस फिल्म के निर्देशक का नाम। तो क्या यही वो आदमी है जिसने वो फिल्म बनाई है जिसके बारे में उसने भविष्यवाणी की थी कि वो बहुत बुरी होगी? हम्म... इतना बुरा इंसान इतनी बुरी फिल्म कैसे बना सकता है? मुझे इस पर इतना हैरान होने की कोई वजह नहीं है!
कृष्णातुलसी ने आह भरी। मेरा गुस्सा या निराशा सामने वाले कमरे में बैठे उस आदमी से नहीं है, बल्कि इस बात से है कि मेरी चाची, जिनका मैं बहुत सम्मान करती हूँ और जिनसे बहुत प्यार करती हूँ, ने मुझे धोखा दिया है। उसने मन ही मन कहा। हे कृष्ण, तुम्हारा क्या फायदा! बस अपने काम से मतलब रखो और शिव बनो। आँखों में आँसू लिए वह सोने की कोशिश कर रही थी, मानो अपने अंतरात्मा को समझा रही हो।

अगली सुबह, वह सुजाता से मिले बिना ही घर से निकल गई। अपनी स्कूटी की आवाज़ सुनकर वह बिना ध्यान दिए दरवाजे की ओर भागी और चली गई। अश्वथ ने सुजाता के कंधे पर तसल्ली से हाथ फेरा, जबकि सुजाता चिंतित चेहरे के साथ उसे देखती रही।
"जाने दो जान, दो दिन में वो ठीक हो जाएगी।"
"नहीं, अचु, मुझे कृष्णा को तुम्हारे बारे में बता देना चाहिए था। उसका गुस्सा जायज़ है। मुझसे गलती हो गई..."
"ठीक है, ठीक है, मैं तुम्हें पुजारी के पास ले चलता हूँ। तुम क्षमा मांग सकती हो। इन सब बातों की चिंता मत करो, प्यारी," अश्वथ ने व्यंग्यपूर्वक सुजाता को शांत करने की कोशिश करते हुए कहा।
जैसे ही वह दफ्तर पहुंची और बैठी, उसने अश्वत्थमन का नाम सुना और गुस्से से पीछे मुड़ गई। "सिनेमा के अलावा तुम्हें किसी और विषय पर बात करना क्यों नहीं आता?"
"क्या... हम तो तनावपूर्ण नौकरी कर रहे हैं। हमें इस तरह के शौक के जरिए थोड़ा आराम चाहिए!"
वह चुपचाप अपनी मूल स्थिति में लौट आई, क्योंकि उसे अपने दोस्तों की कही बातों की सच्चाई पर पूरा भरोसा था।
"कल हमारे इलाके के सिनेमाघर में 'कधल सकुनी' फिल्म की शूटिंग हो रही थी। हम दोनों वापस गए थे।"
रंजनी कहती हैं,
कृष्णा तुलसी को अपने सामने खड़ी व्यवस्था, "माँ" पर अपना माथा पटकने की तीव्र इच्छा हुई। लेकिन क्या उन्हें ही उस व्यवस्था को "माँ" नहीं कहना चाहिए था जो टूटने की कगार पर थी?
उसने दांत पीसते हुए खुद को संभाला। "तुम्हें यह कितनी बार देखना पड़ेगा?"
"आप इसे जितनी बार चाहें देख सकते हैं। छोड़िए, बात ये नहीं है। उस थिएटर में कुछ और ही हुआ था। हमारे एचपी फिल्म देखने थिएटर आए थे।"

"हाँ, बिल्कुल सही, तुम्हारी तरह वो भी उस फिल्म का दीवाना था, तो ज़रूर उसी वजह से आया होगा," उसने सोचा, निरंजन की बॉडी लैंग्वेज में फिल्म के हीरो की आत्म-पीड़ा की झलक देखकर। क्या उस फिल्म का उस पर वाकई असर हुआ था?
"अरे, वो अकेला नहीं आया। वो अपने साथ एक महिला को भी लाया है।"
वाह! यह खबर तो कृष्णा तुलसी के लिए भी चौंकाने वाली है।
"क्या मैं उसका दोस्त बन सकता हूँ?"
"हम्म... दोस्त बारी-बारी से एक-दूसरे को आइसक्रीम और पॉपकॉर्न खिलाते हैं। ये एक प्रेम प्रसंग है। हमने इसकी एक तस्वीर ले ली है।"
प्रिया ने अपना फोन निकाला और दिखाया, और थिएटर के अर्ध-अंधेरे में भी यह स्पष्ट था कि यह निरंजन था। वे पास-पास बैठे एक-दूसरे को देख रहे थे।
"यह क्या है? यह किसी और का निजी सामान है। क्या मैं इसकी तस्वीर ले सकता हूँ?"
"चलिए देखते हैं कि क्या यह एचपी हमें कभी इसे घेरने में मदद कर सकता है।"
"प्यार या दोस्ती उनका निजी मामला है। हम इसमें दखल कैसे दे सकते हैं? बस अपना काम ठीक से करो।"
जब वे तीनों काम पर लौटे, तो टीम लीडर नीलवन्नन उनके सामने खड़े होकर गरजते हुए बोले, "तुम लोग क्या कर रहे हो?"
"आप लोग दफ्तर के समय में हंसते-मजाक करते रहते हैं, अपने काम को नजरअंदाज करते हैं। आपने एमडी को अपने पास से गुजरते हुए भी नहीं देखा। उन्होंने मुझे फोन किया और कहा कि वे धड़ाधड़ खरीद-फरोख्त कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि वे किसी और को बदल देंगे। क्या मुझे इसकी जरूरत है?" नीलवन्नन चिल्लाया, जिससे दफ्तर में मौजूद सभी लोग मुड़कर देखने लगे।
"माफ़ कीजिए महोदय... माफ़ कीजिए महोदय..." वह खड़ा हो गया और तीनों महिलाओं के कई बार माफ़ी मांगने के बाद ही वह शांत हुआ। "अब सांस लेने के लिए भी मत हिलना। ठीक से बैठो और अपने काम पर ध्यान दो," उसने चेतावनी दी और चला गया।
"क्या तुमने देखा कि सांस लेने के लिए भी इन लोगों से इजाज़त लेनी पड़ती है?" तीनों ने आह भरी और कीबोर्ड पर टाइप करना शुरू कर दिया।

दिनभर निरंजन अपना पेय लेने के लिए नीलवन्नन के घर आता रहा, और दिन के अंत में उसने उनकी कार्य रिपोर्ट स्वीकार नहीं की और उसे टालता रहा।
"बताओ, क्या तुम्हें अपने इस गुस्से का कारण पता है?" प्रिया ने कृष्णा तुलसी को पकड़कर गले लगाते हुए धीरे से कहा।
"अगर आप हमें घर पर काम न देकर सिर्फ दफ्तर में काम दें, महोदय, तो हम बिना थके काम कर सकते हैं," कृष्णातुलसी के इस साहसी भाषण को सुनकर निरंजन दंग रह गया।
"अरे, क्या तुम्हें पता है कि तुम किससे बात कर रहे हो? तुम पूरे देश से आए हो और अभी-अभी तुम्हारी तनख्वाह बढ़ी है, तुम हमारे एमडी के बारे में इस तरह कैसे बात कर सकते हो, जिन्होंने तुम्हें इतना प्रशिक्षित किया और तुम्हें इस पद पर बनाए रखा?" नीलवन्नन चौंक गया।
कृष्णातुलसी ने अपनी आँखें कसकर बंद कर लीं। नीली आँखों वाली इस लड़की का भी यही काम है, जो अक्सर उसे गाँव से यहाँ काम करने आने पर चिढ़ाती रहती है।
"क्या आपको याद है कि ये तीनों दो साल पहले हमारी कंपनी में शामिल होने पर कैसे थे?" निरंजन ने पूछा, और वह अविश्वास भरी नजरों से उसकी ओर देखने लगी।
तीनों महिलाओं ने अपनी पलकें झुका लीं।

7

कृष्णातुलसी को स्कूटी रोकते हुए सुनकर सुजाता झट से बाहर आई। "आंटी, मुझे ऑफिस का बहुत काम है," उसने बिना उसकी ओर देखे कहा और जल्दी से नीचे उतर गई।
जब वह कमरे में दाखिल हुई तो दफ्तर कर्मचारी का गुस्सा शांत नहीं हुआ था। वह बार-बार इधर-उधर घूम रही थी और अपने हाथ मल रही थी। उसने कितनी बातें की होंगी?
निरंजन की बातों में कुछ सच्चाई थी। तीनों दोस्त दक्षिणी जिले के छोटे-छोटे गांवों से चेन्नई आए थे, एक आईटी कंपनी में काम करने के लिए। उनकी दोस्ती का कारण उनकी समानता ही थी। निरंजन ही वह पहला व्यक्ति था जिसने दफ्तर में खड़े उन लोगों को प्रोत्साहित किया और सिखाया जो अचंभित और असमंजस में थे।
वह हमेशा कई दिलासा देने वाले शब्द कहा करते थे, जैसे, "क्या तुम्हें गांवों के बारे में कुछ नहीं पता? दरअसल, हम जैसे शहरवासियों के पास वह स्पष्टता नहीं होती जो ग्रामीणों के पास होती है।"

फिर उसने उन्हें नीलवन्नन के हवाले कर दिया। वे एक साल से काम सीख रहे थे और पिछले एक साल में उन्होंने काफी तरक्की की थी। सब कुछ ठीक था, लेकिन इस तरह की बातें करना अस्वीकार्य था। रंजनी और प्रिया तुरंत भड़क उठीं।
"जी सर, आपने मेरे लिए बहुत कुछ किया है। हमें आपके लिए काम करके समय बर्बाद नहीं करना चाहिए," उन्होंने कहा।
"मैडम कैसी हैं?" निरंजन ने हल्के व्यंग्य के साथ पूछा।
"आपने मुझे बहुत अच्छी तरह से प्रशिक्षित किया है, महोदय। अब तो मुझे यह भी पता है कि आपके पद से इस कंपनी का प्रबंधन कैसे करना है," कृष्णाथुलासी ने मुंह खुला रखकर, लड़खड़ाती हुई आवाज में कहा।
वो ज़रूर बहुत गुस्से में होगा। अगर वो नौकरी छोड़ दे तो कोई हैरानी नहीं होगी। तीन साल का समझौता है। लेकिन कंपनी का प्रबंध निदेशक जो चाहे कर सकता है, है ना?
अब, एक साल पहले के विपरीत, उसे नौकरी छूटने पर क्या करना है, इस दुविधा का सामना नहीं करना पड़ता। लेकिन उसे दूसरी नौकरी मिलने तक तो गुज़ारा करना ही होगा! वह असमंजस में इधर-उधर घूम रही थी कि तभी दरवाजे पर दस्तक की आवाज़ से वह चिढ़ गई। अश्वथ बाहर खड़ा था। उसने सिर हिलाकर उसे नायक की मुद्रा याद दिलाई, जो दरवाजे से टेक लगाकर बाहें मोड़े खड़ा था। इसलिए वह नायक की नकल नहीं कर रहा था। नायक अपने खुद के अनुभवों पर अमल कर रहा था। वही मूल प्रेरणा था। प्रिया, जो इस तथ्य से अनभिज्ञ होकर नायक का अनुसरण कर रही थी, रंजनी के बारे में सोचकर अपराधबोध महसूस कर रही थी।
"ऑफिस में क्या गड़बड़ है?" असवत ने चौंककर पूछा। उसे कैसे पता चला?
"कोई बात नहीं। आप अपना काम करते रहिए।"
उसने अपनी दाढ़ी सहलाते हुए उसे ध्यान से देखा और कहा, "हम्म।" इस इशारे पर उसने तुरंत अपनी नज़रें उससे हटा लीं और बुदबुदाई, "सही कहा ना?"
"मुझे समस्या बताओ। हम इसे ठीक कर सकते हैं।"
उसने मन ही मन सोचा, "सर्वशक्तिमान जो इस विशाल संसार को बचाने आए हैं, सब कुछ ठीक कर देंगे। क्या आप सब कुछ ठीक कर देंगे, निर्देशक महोदय? क्या आपको मदद की

ज़रूरत है? क्या आपको सी आती है? सी++...जावा...पायथन...? क्या आप कोडिंग कर सकते हैं?"
अरे बाप रे, मुझे समझ नहीं आ रहा कि आप क्या कह रहे हैं...
"ठीक है, ठीक है, तुम्हें सब पता है। अब चलो, नीचे चलते हैं।" उसने सहज ही हाथ बढ़ाकर उससे हाथ मिलाया।
"कितनी शर्मनाक बात है? क्या तुम बिना इजाज़त के किसी महिला का हाथ इस तरह छू सकते हो?" असवत ने हैरानी से उसकी तरफ देखा।
"क्या, कृष्ण, आप किस युग में हैं? क्या किसी पुरुष और स्त्री का मित्रता में हाथ मिलाना गलत है?"
"यह ठीक है, लेकिन क्या इसका मतलब यह नहीं है कि लड़की को यह पसंद आना चाहिए?" अश्वथ ने दोनों हाथ ऊपर उठाते हुए कहा, "ठीक है, अगर आपको मेरा छूना पसंद नहीं है, तो मत छुओ। मैंने आज गेहूं की परोठी बनाई है। आओ और खाओ।"
"मैंने अनजाने में उस दिन तुम्हारा बनाया हुआ खाना खा लिया। क्या तुम्हें लगा कि अगर मैं हमेशा एक ही खाना खाऊँगी तो मैं वापस तुम्हारे पास दौड़कर आऊँगी?"
"अरे कृष्णा, तुम्हें क्या हुआ है? तुम अपनी हर बात का गलत मतलब निकाल लेते हो। सुजा तुमसे बात करने के लिए इंतजार कर रही है। मैंने इसलिए फोन किया ताकि हम खाना खाते हुए बात कर सकें।"
"मौसी, हम दोनों मिलकर मुझे मनाने की योजना बना रहे हैं, है ना? मैं आसानी से नहीं मानूंगी। जाओ अपने प्यारे को बता दो कि मैं अभी भी गुस्से में हूँ," उसने दरवाजा कसकर बंद करते हुए कहा।
उसके बाद के दिनों में, वह सुजाता का चेहरा देखे बिना ही चली गई। उसने अश्वथ की तरफ मुड़कर भी नहीं देखा। उसके बाद निरंजन ने उससे बात नहीं की, मानो वह दफ्तर में उससे डरा हुआ हो।
लेकिन उसे वे काम नहीं दिए गए जो उसे घर पर दिए जाते थे। जब मैंने टीम के सदस्यों से पूछताछ की, तो पता चला कि वह अकेली ऐसी थी जिसे कोई काम नहीं दिया गया था। साफ तौर पर ऑफिस में उसके साथ भेदभाव किया जा रहा था।

इसलिए उसे एहसास हो गया कि उस दफ्तर में उसके दिन गिने-चुने रह गए हैं। उसने जल्द ही दूसरी नौकरी ढूंढने का फैसला किया और उसके लिए इंतजाम शुरू कर दिए।
कृष्णातुलसी अगले दिन जिस नौकरी के लिए आवेदन किया था, उसके साक्षात्कार की तैयारी कर रही थी। जब भी दरवाजे पर दस्तक होती, हमेशा सामने वाला आदमी ही होता। वह बेतरतीब समय पर दस्तक देता। वह माचिस मांगता... सिगरेट... और न जाने क्या-क्या। उसने अभी तक उसे बैठने और नहाने के लिए भी नहीं कहा था, बस यही बाकी था।
अश्वत्थमन को मन ही मन कोसते हुए उसने दरवाजा खोला और दंग रह गई। सुजाता दरवाजे पर खड़ी थी। सीढ़ियों से ऊपर आने की थकान उसकी सांसों में साफ झलक रही थी। "आंटी, आप यहाँ क्यों आईं?" उसने घबराकर उसका हाथ पकड़ा और उसे अंदर बुलाया।
मैं क्या करूँ? तुम नीचे तक नहीं आ रहे। मेरी तरफ देख भी नहीं रहे। मैं क्या करूँ?
"कुछ नहीं, आंटी। ऑफिस में बस थोड़ी सी दिक्कत है। बस इतना ही..."
"कृष्ण, मूर्ख मत बनो! मैं तुम्हें जानता हूँ। तुम बहुत चालाक हो। तुम्हें लगता है कि मैंने अश्वथ को तुमसे छिपा रखा है। इसीलिए तुम मुझसे बच रहे हो।"
हालांकि यह सच था, फिर भी वह सुजाता को बताने में हिचकिचा रही थी, और जैसे ही उसने अपनी नज़र घुमाई, उसे सामने वाले कमरे के दरवाजे पर हलचल दिखाई दी। वह अंदर से आंटी को धक्का दे रहा था। रस
"मेरा इंटरव्यू है, आंटी। आप घर के अंदर ही रहिए, मैं आकर आपसे मिलती हूँ," उसने कहा और उसे गोद में उठाकर नीचे ले गई। फिर उसने सामने वाले कमरे का दरवाजा जोर से खटखटाया।
उनका कमरा हमेशा खुला रहता था, किसी मठ की तरह, जहाँ कोई भी आ-जा सकता था। वह खुद को हमेशा कमरे में बंद रखती थी।
"जो तुम्हारा बलात्कार करना चाहता है, उसके लिए इस दरवाजे का क्या मतलब है?" एक दिन, कृष्णा तुलसी सीढ़ियों से नीचे उतर रही अपनी सहेली के पास से गुजरते हुए एकदम रुक गई।
अंतिम सीढ़ी पर पहुँचकर वह रुका, पीछे मुड़ा, उसकी ओर देखा, आँख मारी और चला गया।
"पापी! तुम क्या बकवास कर रहे हो?" कृष्णातुलसी का दिल गुस्से से उबल रहा था।

अगले दिन, "कृष्णा, इस इलाके में मुझे सिगरेट कहाँ मिलेंगी?" उसने पूछा, और जब उसने अंदर आने की कोशिश की, तो उसने दरवाजा खोलकर चिल्लाकर कहा, "वहीं रहो। अगर तुम दरवाजे से अंदर आए, तो बात अलग होगी।"

वह एक पैर पर खड़ा हो गया, पैर ऊपर उठाए हुए। "क्या मैं अब इस पैर को नीचे रख सकता हूँ? क्या मुझे नहीं रखना चाहिए?" उसने अपना चेहरा ऐसे बदल लिया जैसे उसे पछतावा हो रहा हो।

वह गुस्से में उठी, अपने साथ लाई हुई बटन वाली छतरी को ऑफिस ले गई, उसे उसकी छाती पर दबाया और उसे बाहर धकेल दिया। "तुम्हें आठ नंबर का सिक्का अंदर नहीं ले जाना चाहिए," उसने एक उंगली से चेतावनी दी।

"ठीक है," उसने विनम्रतापूर्वक हाथ जोड़ते हुए और मुंह ढकते हुए कहा।

"क्या तुम्हें लगता है कि मैं कनाची जैसी दिखती हूँ? जब भी मैं तुम्हें देखती हूँ, मुझे माचिस और सिगरेट याद आ जाती हैं..."

"इसमें क्या खास बात है, कृष्णा? अगर तुम सिगरेट ऑनलाइन ऑर्डर करोगे, तो उन्हें लाने में बहुत देर हो जाएगी। मुझे अभी चाहिए... मैंने गली के कोने पर एक छोटी सी दुकान देखी है। क्या वहाँ मिलेंगी?"

"क्या मैं जाकर उसे ला सकती हूँ और आपको वापस दे सकती हूँ?" उसने व्यंग्यपूर्वक पूछा।

"अच्छा विचार है। मैं ऐसा ही करूंगा। अगर मैं बाहर जाऊंगा तो भीड़ होगी। मुझे मास्क पहनना होगा, अपना चेहरा ढकना होगा और बहुत सारा काम करना होगा।"

यह बड़ा सेलिब्रिटी... काश उसमें मुझसे सिगरेट मांगने की हिम्मत होती! उस दिन कृष्णा तुलसी का मन कर रहा था कि वह अपने हाथ में पकड़ी छतरी से उसका सिर फोड़ दे।

आज उन्होंने हिम्मत जुटाकर अपने घर आई महिला को पुकारा और कहा, "मैं कुछ नहीं कहूंगा, कृष्णा, अंदर आ जाओ।"

लेकिन उसने दोनों बाहें इस तरह फैला रखी थीं मानो कमरे में प्रवेश करते ही वह उसे गले लगाने का इरादा रखता हो।

8

"बैठक शुरू हुए आधा घंटा हो चुका है," परिचारिका ने बताया, जिससे कृष्णातुलसी कांप उठी। उसके बिना बैठक कैसे चल सकती थी?

जिस प्रोजेक्ट पर उन्होंने काम शुरू किया था, वह कल समाप्त हो गया। क्लाइंट को प्रोजेक्ट इतना पसंद आया कि कंपनी ने प्रोजेक्ट पर काम करने वाले लोगों की सराहना करने के लिए एक मीटिंग का आयोजन किया था। यह मीटिंग उनके बिना ही चल रही थी, जिन्होंने पिछले दो महीनों से इस प्रोजेक्ट पर कड़ी मेहनत की थी।

कृष्णा तुलसी की आँखों में आँसू भर आए जब उन्हें दिन-रात सहा गया दर्द याद आया। वह सभा भवन के बाहर बेजान सी बैठ गईं। कितना अफ़सोस! सभा समाप्त होने के बाद भी वह एक घंटे तक वहीं बैठी रहीं।

उस तरफ गए दफ्तर के कर्मचारियों ने उसे दया भरी निगाहों से देखा, लेकिन उसे इसका एहसास भी नहीं हुआ। निरंजन ने सबसे पहले मीटिंग हॉल का दरवाजा खोला और दो ग्राहकों के साथ बाहर आया। उसने उसे एक तरह की टेढ़ी मुस्कान के साथ देखा और तिरस्कार से आगे बढ़ गया।

मुरली, धनुष, प्रिया और रंजनी, जो पीछे से आए थे, ने उसे देखा और हिचकिचाए, लेकिन उनके पीछे आए नीलवन्नन ने कहा, "काम देखो, तुम यहाँ क्यों खड़ी हो?" और उसे वहाँ से हटा दिया।

कृष्णातुलसी गुस्से से उठी और नीलवन्नन के पास आई। "महोदय, मैं भी इस परियोजना पर काम कर रही हूँ। आपने सिर्फ दूसरों को ही शामिल किया है, मुझे छोड़ दिया है।"

"पिछले एक हफ्ते से तो तुम ही इस प्रोजेक्ट से दूर रहे हो! मैं तुम्हें इसमें कैसे शामिल कर सकता हूँ?"

वह दो महीने से दिन-रात एक प्रोजेक्ट पर काम कर रही थी। पिछले एक हफ्ते से ही वह ऑफिस में काम कर रही थी और उसे घर पर कोई काम नहीं दिया गया था। क्या वह इस प्रोजेक्ट पर काम करना बंद कर देगी?

"क्या आपके पास कोई अंतरात्मा है, महोदय?" उसने गुस्से से पूछा।

"मुझे आप सभी को जवाब देने की जरूरत नहीं है। डॉक्टर से मिलें," नीलवन्नन ने मानो नाक सिकोड़ते हुए कहा।
वह अब शुरू होने वाले नए प्रोजेक्टों के लिए टीम लीडर बनने के योग्य नहीं है। वह अभी भी अपने पुराने कौशल का इस्तेमाल कर रहा है। वह इस पद पर इसलिए था क्योंकि वह निरंजन के सामने झुकता था।
सच कहूँ तो, कृष्णा तुलसी ही वह हैं जो समय-समय पर आवश्यक पाठ्यक्रम पढ़ती हैं, खुद को तुरंत अपडेट करती हैं और नेतृत्व के योग्य बनने के लिए खुद को विकसित करती हैं। क्या मुझे सिर्फ इसलिए यहाँ से बाहर रखा जा रहा है क्योंकि मैंने अपनी योग्यताएँ विकसित कर ली हैं? उन्हें खेद हुआ।
"आप क्या सोचते हैं, महोदय? क्या आपको लगता है कि मुझे यह नौकरी छोड़ देनी चाहिए?" उसने निरंजन के ठीक सामने खड़े होकर पूछा।
"आपका हमारी कंपनी के साथ तीन साल का अनुबंध है। आप यूं ही अचानक नौकरी नहीं छोड़ सकते। जाइए, अपनी कुर्सी पर बैठिए और अपना काम कीजिए। अगला प्रोजेक्ट आ चुका है," उन्होंने अधिकारपूर्वक कहा।
कृष्णा तुलसी समझ गई। उसे कंपनी में अच्छी नौकरी तो मिल जाएगी, लेकिन इसके लिए उसे कोई सराहना नहीं मिलेगी। उसे कहा जाएगा कि वह घर पर दिए गए काम की देखभाल नहीं करती।
ओह... ये लोग तो थोड़ी सी तरक्की चाहने वाले का मज़ाक ही उड़ा देते हैं! अपनी परेशान आँखों को उससे छिपाते हुए, वह जल्दी से अपनी सीट पर बैठ गई। उसने अपने दोस्तों को हाथ हिलाकर अभिवादन किया जो उसका समर्थन करने के लिए इकट्ठा हुए थे। उसने नीलवन्नन को सिरदर्द की छुट्टी के लिए एक ईमेल भेजा और दफ्तर से चली गई।
वह सड़क के किनारे बने रेस्तरां में दाखिल हुई। होटल के बगीचे में खाने के लिए छोटी-छोटी झोपड़ियाँ थीं। वह यहाँ एकांत पाने के लिए आई थी, और उसने एक झोपड़ी चुनकर बैठ गई।
"मेरी दोस्त आधे घंटे में यहाँ आ जाएगी," उसने वेटर को विदा करते हुए कहा और अपने ऑफिस के कामों में मग्न हो गई।

"कृष्णा, क्या तुम किसी का इंतज़ार कर रही हो?" पहले तो वह अपने सामने आए नकाबपोश आदमी को देखकर डर गई, लेकिन फिर उसकी आवाज़ में शांति आ गई। अश्वथ ने एक नकाब जैसा कुछ पहन रखा था जिससे उसका पूरा चेहरा ढका हुआ था। उसके माथे पर एक काली टोपी थी।

केवल उसकी उभरी हुई आँखें ही दिखाई दे रही थीं। वह, जो आधे मिनट के लिए उन आँखों में खो गई थी जो उसे थोड़ी चिंता और बहुत सुकून से देख रही थीं, अचानक होश में आ गई।

"मैं जहाँ भी जाऊँ, क्या तुम मुझे अकेला नहीं छोड़ोगे? बस मुझे कुछ देर के लिए शांति से रहने दो।"

जिस व्यक्ति ने उसकी आँखों में गहराई तक झाँका था, उसने धीरे से सिर हिलाया, "मैं अब जा रहा हूँ, कृष्णा, क्या हम एक कप कॉफ़ी पी सकते हैं?" उसके कोमल शब्द मोर के पंख की तरह उसके दिल को छू गए। उसने अनजाने में ही सिर हिला दिया।

कृष्ण तुलसी।

जब वेटर कॉफी लेकर चला गया, तो उसने अपना मास्क लगाया और उसके लिए कॉफी मिलाई। "क्या हम भारतीयों में से कितने लोग जानते हैं कि कॉफी तनाव दूर करने का एक बेहतरीन उपाय है? इसे आराम से पीने में उन्हें सिर्फ पांच मिनट लगते हैं और उनकी सारी चिंताएं दूर हो जाती हैं," उसने कॉफी देते हुए कहा।

उसे याद आया कि पहले दिन ही उसके लंबे हाथ एक कप लेकर उसकी ओर बढ़े थे, मानो वह उसे गले लगाने के लिए तैयार हो।

कृष्णातुलसी ने उस आकृति पर "पहिया" चिल्लाने की तीव्र इच्छा को बड़ी मुश्किल से दबाया।

"तुम क्या करने वाले हो?" उसने तेज़ साँस लेते हुए आँखें घुमाईं।

"ये क्या है, कन्नागी? मैं अपने हाथ फैलाकर ये दिखा रहा हूँ कि मेरे पास तुम्हारी तरह छाता नहीं है," मासूमियत से बड़ी चतुराई से सफाई देने वाले उस आदमी के होठों पर एक बनावटी मुस्कान आ गई।

ईथन! मुंह कुछ और कहता है, हाथ कुछ और!

"आंटी को जोड़ों में दर्द है। क्या आपको पता है कि चलना कितना मुश्किल होगा?"

"मैं यह अच्छी तरह जानता हूँ, लेकिन मुझे कोई दूसरा तरीका नहीं पता, कृष्ण। मुझे तुम्हें शांत करना ही होगा," उसने हल्के से कहा, जिससे कृष्ण तुलसी क्रोधित हो गए।
क्या आप अपने स्वार्थी लाभ के लिए किसी बुजुर्ग व्यक्ति को कष्ट पहुंचाएंगे?
"बस करो, कृष्णा! जब भी तुम मुझे देखते हो, मुझ पर दोष मढ़ते रहते हो... मैं बस अपना मन बदल लूँगी और थोड़ा सोचूँगी, यह सोचकर कि क्या इस तरह रहना ठीक है।"
इस आदमी को... इस खलनायक को... अब अलग नज़रिए से देखा जा रहा है! "अपनी अगली फिल्म में खलनायक की भूमिका निभाओ। यही तुम्हें शोभा देता है। खुद को नायक मत समझो," उसने अपने कमरे में जाते हुए और खुद को अंदर बंद करते हुए कहा।
अब, कारण जाने बिना, वह बड़ी सावधानी से कोमल शब्दों का चयन करके उसे सांत्वना दे रहा था, उसके दुख को समझ रहा था। क्या वह खलनायक था? नायक? कृष्णातुलसी वहीं बैठी उसे देखती रही।

9

कृष्णातुलसी ने उस दिन दफ्तर से छुट्टी ली थी और ऑनलाइन इंटरव्यू दे रही थी। दरवाजे पर दस्तक सुनकर वह चिढ़कर उठी। कौन था? उसने शुरू में ही उससे कहा था कि वह उसका रूममेट नहीं बनेगा, बल्कि आकर भालू की तरह खड़ा रहेगा, और वह खुद इंटरव्यू देने आई है।

शायद कोई उससे मिलने आया होगा। पिछले एक हफ्ते से कुछ लोग उससे मिलने आ-जा रहे थे। एक लंबा, पतला आदमी, जिसकी शक्ल देखकर लगता था कि अगर वह अपनी घनी मूंछें हटा ले, तो वह दसवीं कक्षा का छात्र होगा।

ये महान निर्देशक अश्वत्थमन के सहायक हैं। इन्हें यहाँ क्यों आना चाहिए? कृष्णातुलसी हमेशा की तरह उनसे बहस करने लगे और बोले, "हम अगली फिल्म की कहानी पर चर्चा कर रहे हैं," और हमेशा की तरह उन्होंने अपनी आँखें सिकोड़ लीं।

क्या तुम उस तस्वीर को एक वस्तु की तरह इस्तेमाल करने वाले हो? उसने उसे कोसते हुए कहा कि वह तस्वीर बिल्कुल भी काम नहीं करेगी। हालांकि, अश्वत्थमन में उसकी क्रोध और निराशा को मुस्कान से आसानी से दूर करने की क्षमता थी।

लेकिन उनके सहायक प्रकाश और संजय ने इससे अलग बात कही। उन्होंने बताया कि निर्देशक बहुत गुस्सैल थे और अगर छोटी सी भी बात उनकी मर्जी के मुताबिक नहीं होती, तो वे सेट पर मौजूद हर किसी को अपने हिसाब से काम करने के लिए मजबूर कर देते थे। अश्वत्थामा की शारीरिक हाव-भाव, जो उन्हें देखने पर विस्मयकारी हो जाती थी, ने उनके इस कथन की पुष्टि की।

कृष्णा तुलसी अश्वत्थामा के क्रोधित चेहरे की कल्पना भी नहीं कर सकती थी, लेकिन उनका चेहरा, जो हमेशा चंचल, मुस्कुराता हुआ और सौम्य होता था, उसे अपनी कल्पना में भी मधुर प्रतीत होता था।

सुजाता के आग्रह पर ही उससे सुलह करने वाली महिला को अब भी बेचैनी महसूस हो रही थी। भला वह ऐसे बदमाश को अपने साथ कैसे रहने दे सकती थी?

मैं जा सकती थी क्योंकि मुझे तुम्हारा घर नहीं चाहिए था। लेकिन वह हिचकिचाते हुए वहीं रुकी रही, इस डर से कि आंटी को बहुत तकलीफ होगी। वह सुजाता से पहले की तरह खुलकर और सामान्य रूप से बात नहीं कर पा रही थी।

और ठीक समय पर उसका काम रुक गया! इंटरव्यू के बीच पांच मिनट का ब्रेक था, इसलिए वह झट से उठी और चौंककर दरवाजा खोला। बाहर एक बेहद खूबसूरत महिला सादे कपड़े पहने खड़ी थी।

मोटे, गहरे रंग से रंगे होंठों के साथ, वह कर्कश आवाज में "हाय" कहती है।

"तुम कौन हो?" उसने उसी समय पूछा। वह मेरे घर आई और मुझे ऐसे घूरने लगी मानो पूछ रही हो कि मैं कौन हूँ। "जो यहाँ हो, वही मुझे बताए," उसने कहा।

"क्या यह अस्वा नहीं है?" यह सवाल पूछने के बाद, उसने ओयलाई के सामने थोड़ा झुककर प्रणाम किया। इस सवाल पर वह झुककर क्यों गायब हो रही है? ऐसा लग रहा है जैसे वह अपनी आँखें निकाल कर खुद को अंधा कर लेगी।

"माफ़ कीजिए, यहाँ वैसा कोई नहीं है।"

"अरे, इसे छुपाने की कोशिश मत करो, अस्वा यहीं रुक रहा है। क्या तुम्हें पता है मैंने उसे ढूंढने के लिए कितनी कोशिश की? मैं उसे आज जाने नहीं दूंगी," उसने दृढ़ता से कहा और हॉल के सोफे पर बैठ गई।

कृष्णातुलसी का दिल उबल रहा था। उसने अंदर झाँकने के लिए दरवाजा खोला और इस तरह बैठ गई कि अंदर आने वाले किसी भी व्यक्ति की नज़र उस पर पड़ जाए, और उसने अपना फोन हाथ में पकड़ रखा था।

कृष्णातुलसी इंटरव्यू ठीक से नहीं दे पाई। जब उसे एहसास हुआ कि यह नौकरी उसके लिए बिलकुल भी नहीं है, तो उसका दिल और भी गुस्से से भर गया। सारी गड़बड़ की वजह वही था। उसने गुस्से में फोन उठाया और उसे कॉल किया।

"आखिरकार तुमने अपनी मूर्ख बुद्धि दिखा ही दी, है ना? तुमने एक बदमाश को घर में लाकर बिठा दिया? क्या यह घर ठीक रहेगा! क्या तुम ठीक रहोगे? मुझे फिर कभी आधी रात को मत जगाना! अगर तुम यहाँ होते, तो मैं यहाँ नहीं आती," वह चिल्लाई और उसके जवाब का इंतजार किए बिना फोन काट दिया।

वह उतनी ही तेज़ी से नीचे गई और सुजाता से बोली, "आंटी, ऊपर एक औरत आपकी कुल्हाड़ी ढूंढ रही है। मुझे यह पसंद नहीं है। या तो आपकी कुल्हाड़ी यहाँ होनी चाहिए या मैं। आप खुद तय कर लीजिए कि आपको किसकी ज़रूरत है।" उसने जल्दी से कहा, अपनी स्कूटी उठाई और चली गई।

ध्यान भटकने के कारण वह कुछ देर गाड़ी चलाती रही और फिर एक पार्क में जाकर बैठ गई जो उसे अच्छा लगा। इसी बीच, अश्वथ के लगातार फोन आने पर उसने सब कुछ बंद कर दिया। फोन खुला ही रहा और मैसेज आने पर उसने वॉइस मैसेज नहीं सुना।

लेकिन दस मिनट से ज़्यादा बर्दाश्त न कर पाने पर उसने मैसेज खोला। "कहाँ बैठे हो बेवकूफ? आंटी का एक्सीडेंट हो गया है। जल्दी आओ," उसने गुस्से में मैसेज भेजा था। वह चीखी और स्कूटी लेकर वहाँ से चली गई।

"वे जल्दी में ऊपर आए। वे फिसल गए और सीढ़ियों से नीचे लुढ़क गए। सौभाग्य से, मैं सही समय पर पहुँच गया और उन्हें एम्बुलेंस में यहाँ ले आया," अश्वथ ने अस्पताल को सूचित किया।

उसने सुजाता की ओर देखा, जो दवाइयों के सहारे सो रही थी, उसकी भौंहों में हल्का दर्द था और आँखों में आँसू थे। "माफ़ करना, आंटी," उसने धीरे से कहा और उसका हाथ सहलाया।

"मैं किसी भी बात पर गहराई से ध्यान नहीं देता, मैं उसके बारे में सोचता भी नहीं। मैं हर काम में जल्दी में रहता हूँ," उसने डांटे गए व्यक्ति की ओर गुस्से से देखते हुए कहा, जिसने फ्लास्क से कॉफी एक कागज़ के कप में डाली और उसे आगे बढ़ा दिया।

"पहले इसे पी लो। मेरे होंठ सूख रहे हैं। मुझे डांटने के लिए तुम्हें एक छड़ी की ज़रूरत पड़ेगी।"

मुंह और गला सूखते देख उसने कॉफी का कप उठाया। उसने अभी आधा ही पिया था कि उसके मुंह से एक आवाज निकली।

डॉक्टर क्या कहते हैं?

"कोई फ्रैक्चर नहीं है। मेरे टखने के लिगामेंट में हल्का सा चीरा है। अगर मैं इसे दस दिन तक पट्टी से बांध कर रखूं तो यह ठीक हो जाएगा। डॉक्टर ने कहा कि मुझे आज शाम को छुट्टी मिल सकती है।"

"मुझे आंटी से इतनी कठोर भाषा में नहीं बोलना चाहिए था," उसने सच्चे पश्चाताप के साथ कहा।
"मैं समझ गया। कृष्णा, क्या तुम यहाँ मेरा ख्याल रखोगे? मुझे बाहर काम है," अश्वथ हिचकिचाते हुए बोला। "मैं अकेला हूँ..."
मुझे एक-दो घंटे के लिए बाहर काम है। आपके डिस्चार्ज होने पर मैं वापस आ जाऊंगी। तब तक मेरा ख्याल रखना।
"आंटी की देखभाल करने के लिए आपको मुझे कुछ भी बताने की जरूरत नहीं है," अश्वथ ने झुंझलाहट में सिर हिलाते हुए कहा।
वह सुजाता का हाथ पकड़कर उसके बगल में बैठ गई। आधे घंटे बाद जब सुजाता धीरे-धीरे उठी तो उसने जल्दी से कहा, "सॉरी, आंटी।"
जब सुजाता की नींद खुली, तो पास में कृष्ण तुलसी को देखकर उसका चेहरा खिल उठा। कृष्ण तुलसी ने रुंधे हुए स्वर में पूछा, "तुम घर छोड़कर नहीं जाओगी, है ना?" सुजाता ने वादा किया, "बिल्कुल नहीं जाऊंगी, आंटी।"
“मैं उस औरत को भगाने के लिए जल्दी से सीढ़ियाँ चढ़ी। मेरा पैर फिसल गया...” आंटी ने धीरे से अपना मुँह ढकते हुए कहा। “बातें मत करो, आंटी, आराम करो।”
सुजाता ने धीरे से उसका हाथ हटाया और उसे बताया, "वह वही महिला है जो अश्वथ के पास उसकी अगली फिल्म में अभिनय करने का मौका मांगने आई थी।" कृष्णाथुलसी के भीतर क्रोध उमड़ने लगा।
क्या वे उस महिला की पिटाई और उसे हिलाने-डुलाने की घटना को याद करने के लिए परिवार के घर में आने के योग्य हैं? हालाँकि उसके होंठ शब्दों से काँप रहे थे, फिर भी वह चुपचाप बैठी रही, सुजाता के लिए अपना मुँह बंद रखा।
"अस्वत एक अच्छा लड़का है। उसके खेल के आधार पर उसके बारे में गलत धारणा न बनाएं।"
"आंटी, हम इस बारे में बाद में बात कर सकते हैं। अब आप सो जाइए और आराम कीजिए।"
"मुझे नींद नहीं आ रही है। मैं काफी समय से अश्वथ के बारे में आपसे बात करना चाहता था। हमें इस तरह मिलने का समय भी नहीं मिला।"

"माफ़ कीजिए, आंटी," उसने कहा, उसे याद आया कि उसने इसके लिए समय नहीं निकाला था। उसने सोचा कि अगर उन्होंने आंटी की बात मान ली होती तो शायद उन्हें इस हालत में बिस्तर पर लेटना न पड़ता।

"अश्वथ मेरी सौतेली बहन का बेटा है," सुजाता ने आश्चर्य भरी नजरों से देखते हुए धीमी आवाज में कहा।

"क्या आप उनकी सौतेली माँ हैं, आंटी?" उन्होंने सहमति में सिर हिलाया, "अक्का, कंचना मुझसे पाँच साल बड़ी हैं। हमारा परिवार धनी है। हम दोनों अपने माता-पिता की बेटियाँ हैं। पिताजी ने कंचना की शादी एक ऐसे व्यक्ति से तय की जो हमारे परिवार में संपन्न और प्रभावशाली था। मेरे पिता मेरी बहन अश्वथ से ज़्यादा मेरे साथ पले-बढ़े। हम दोनों घर में साथ-साथ खेलते थे। पिताजी मेरी शादी के लिए दूल्हा ढूंढने लगे। लेकिन मुझे हमारे ऑफिस मैनेजर जयराम से प्यार हो गया। घर में सभी ने मेरे प्यार का विरोध किया। वे इस बात पर अड़े थे कि मैं किसी ऐसे व्यक्ति से शादी नहीं कर सकती जो उनके दर्जे के लायक न हो। कोई और विकल्प न होने पर, मैंने घर छोड़ दिया और जय से शादी कर ली।"

कृष्णातुलसी ने सुजाता की ओर आश्चर्य से देखा। क्या सुजाता आंटी के पीछे कोई ऐसी प्रेम कहानी छिपी है, जो इतनी धीमी आवाज़ में बोलना भी नहीं जानतीं? क्या वे इतनी साहसी महिला हैं? सुजाता मुस्कुराई क्योंकि वह उसकी कल्पना को समझ गई थी।

"प्यार ने मुझे बहुत ताकत दी। और मेरे घोड़े का सहारा तो बिल्कुल अलग है।"

"अश्वथ? क्या वह तब छह साल का था?"

"आठ साल का। एक साल से अश्वथ हमारे प्यार का संदेशवाहक रहा है। हम अश्वथ के माध्यम से पत्रों और उपहारों का आदान-प्रदान करते थे।"

कृष्णातुलसी ने सुजाता को अलग नज़रिए से देखा, "तप्पुधम्मा, अगर मैं अब इसके बारे में सोचती हूँ, तो यह गलत लगता है। लेकिन उस समय हमारे पास कोई और विकल्प नहीं था। साथ ही, मैंने अश्वथ को कभी बेटे के रूप में नहीं देखा। कम उम्र के बावजूद, वह मेरा बहुत अच्छा दोस्त था। वह मेरी जय से शादी करवाने के लिए भी बहुत उत्सुक था, इसलिए उसकी मदद से हम घर से निकल गए और शादी कर ली। उस दिन से हमारे परिवार ने हमें बहिष्कृत कर दिया।"

एक बार जब मैं अपनी माँ से मिलने गई क्योंकि वह बीमार थीं, तो मेरी बहन और अथान ने मुझसे पूछा, 'क्या तुम पैसे लेने आई हो?' उस दिन से मैं उनसे दूर रहने लगी और कभी उनके पास नहीं गई। अश्वथ हॉस्टल में पढ़ने चला गया और हमारी दोस्ती भी टूट गई। उसके बाद, मैंने अश्वथ को तीन महीने पहले ही देखा। उसने मुझे सड़क पर देखा और खुद को पहचान लिया और मुझसे बात करने लगा। उसने कहा कि वह अकेला रह रहा है क्योंकि उसके पिता को सिनेमा का काम पसंद नहीं है। उसने मुझे अपने साथ रहने के लिए आमंत्रित किया है।
"एक ऐसी महिला के लिए जो कई वर्षों से अपने परिवार से अलग है और अब बिना पति या बच्चों के एकाकी जीवन जी रही है, अश्वथ किसी आशीर्वाद की तरह आया है," सुजाता ने कृष्णा तुलसी को बड़ी-बड़ी आँखों से देखते हुए कहा।
कृष्ण तुलसी ने उसकी आंखों में विनती देखकर उसके हाथ पकड़ लिए और कहा, "हमें अलग मत करो।"
"क्या मैं इतनी निर्दयी हूँ कि तुम्हारी धुरी को तुमसे अलग कर दूँ?" वह मुस्कुराई।
सुजाता का चेहरा खिल उठा। दो घंटे बाद आए अश्वथ ने कृष्णातुलसी के चेहरे को गौर से देखा। "सुजा, ऐसा लग रहा है जैसे आपने हमें हमारे जीवन का पूरा इतिहास सुना दिया हो, महोदया, आपके चेहरे से करुणा झलक रही है," उसने थोड़े गुस्से भरे स्वर में कहा।

10

कृष्णातुलसी कराहने की आवाज़ सुनकर जाग उठी, "म्म... आह..." सुजाता दर्द से कराह रही थी। वह सुजाता की मदद करने के लिए पास ही लेटी हुई थी।
"आंटी, क्या हुआ?"
“मेरे पैरों का दर्द असहनीय है। मैं सो नहीं पा रहा,” वह बिस्तर पर करवटें बदलता रहा। उसे बिस्तर पर रखने के लिए दर्द निवारक दवाइयाँ दी गईं। लेकिन दर्द हो तो क्या कर सकते हैं? उसने धीरे से उसके पैर पर हाथ फेरा। लेकिन समय बीतने के साथ, सुजाता की कराहें तेज होती गईं और उसने ऊपर मौजूद अश्वथ को बुलाया। वह तुरंत नीचे आया और डॉक्टर को बुलाया।
"चूंकि वे बुजुर्ग हैं, इसलिए वे सीमित मात्रा में ही दर्द निवारक दवा दे सकते हैं। वे हमसे एक रात के लिए दर्द सहने के लिए कह रहे हैं।"

वे दोनों सुजाता के पास बैठ गए और उससे बात करके उसका दर्द भुलाने की कोशिश करने लगे... हालांकि उन्होंने उसे सहलाने की कोशिश की, सुजाता दर्द सहन नहीं कर सकी। उसकी आंखों से आंसू बहने लगे।

"मैं आ रहा हूँ," अश्वथ ने ऊपर जाकर कहा और गिलास में लाल रंग का तरल पदार्थ लेकर वापस आया। "सुजा, यह टॉनिक पी लो। दर्द कम हो जाएगा।"

उसने सुजाता के होंठों को अलग करने और पेय डालने में भी मदद की।

जब पूरा गिलास खाली हो गया, तब उसे शक हुआ कि वह गिलास उठाकर उसे सूंघेगी, उसकी आंखें गुस्से से लाल थीं और उसने अश्वत को घूरकर देखा। "यह क्या है?" उसने दांत पीसते हुए कहा।

सुजाता ने एक हल्की सी आह भरकर अपनी आँखें बंद कर लीं और सोने लगी, और उसने लापरवाही से कहा, "रेड वाइन," जैसे ही उसने उसका कंबल ठीक किया।

"अरे गंदे शराबी! तू तो बूढ़ों को शराब पिला रहा है! क्या अब भी इतना गुस्सा करेगा?" वह हांफते हुए बोली।

उसने उसे पकड़ा और कमरे से बाहर घसीट लिया। "धीरे बोलो, चाची को सोने दो।"

"सो जाओ! तुम उन्हें नशे में इतना मग्न कर रहे हो कि वे खुद को भूल जाते हैं, और तुम इसे नींद कहते हो!"

"कृष्णा, मुझे इसके अलावा कोई और तरीका नहीं पता! रेड वाइन शरीर पर उतना बुरा असर नहीं डालती जितना तुम सोचते हो। वास्तव में, सीमित मात्रा में सेवन करने पर यह शरीर के लिए अच्छी भी होती है।"

"अपनी सफाई देना बंद करो, तुम और तुम्हारी सौतेली माँ, जाओ सो जाओ, मैं अपने कमरे में जा रही हूँ," वह गुस्से में ऊपर चली गई और अपने कमरे में पहुँच गई।

"कैसी हो, आंटी?" जब मैं अगली सुबह नीचे आई और पूछा, तो सुजाता के चेहरे पर कोई भाव नहीं था।

"अब कोई दर्द नहीं है। मेरा शरीर बहुत हल्का महसूस हो रहा है।"

"मैंने तुम्हें जो टॉनिक दिया है, उससे सब ठीक हो जाएगा," अश्वथ ने कॉलर उठाते हुए उसे घूरकर कहा।

"हाँ, यह बहुत अच्छा लगता है। आज भी, वह योद्धा मुझे वही चीज़ देगा।"
"इसमें क्या बुराई है, प्यारे! तुमने ही तो मुझे दिया है!" जब अश्वत बोलने की कोशिश कर रहा था, तभी कृष्णतुलसी ने उसके कंधों पर थप्पड़ मार दिया। "तुम किस बारे में बात कर रहे हो?"
"अगर सुजा मेरे प्रियतम कृष्ण को मांगे तो मैं कैसे मना कर सकती हूँ? अगर तुम भी चाहो तो मांग लो। मेरे प्रियतम से ईर्ष्या मत करो।"
"यह वाला..." उसने डिब्बे से तकिया उठाया और सबसे पहले उसे गले लगाया।
सुजाता उन्हें लड़ाई का आनंद लेते हुए देख रही थी। जो नीचे झुककर उसके वार सह रहा था, उसने कहा, "बस करो, मेरे हाथ में दर्द हो रहा है, आओ खाना खाओ।" वह रसोई में चला गया।
सड़क किनारे मिलने वाली पानी की चटनी को छोटी इडलियों पर डाला गया। वह इसे इतने अलग-अलग तरीकों से कैसे पकाते हैं... कृष्णातुलसी ने आश्चर्य से उनकी ओर देखा, "जो लोग जीवन जीते हैं और उसका आनंद लेते हैं, वे भोजन का भी आनंद लेने लगेंगे। जो लोग भोजन में स्वाद की अपेक्षा रखते हैं, वे भी खूबसूरती से खाना बनाना सीख जाएंगे। अगर आप इसी तरह हर समय लैपटॉप में सिर घुसाए रखेंगे, तो आपका मन कहीं नहीं जाएगा। जीवन ही नीरस और भावनाओं से रहित हो जाएगा।"
"वाह, तुम्हारी भावनाएं तो तुम्हारी तस्वीरों में साफ झलकती हैं!" उसने अश्वथ के स्पष्टीकरण को नापसंद करते हुए मुंह बनाया।
"श... पापा, मेरे पास आपसे झगड़ने का समय नहीं है। मुझे कुछ काम करना है। मैंने दोपहर के खाने के लिए मशरूम राइस और चिकन रायता तैयार किया है। आप दोनों इसे गर्म करके खा लीजिए। मैं जा रही हूँ।"
"मेरा एक कार्यालय है..."
"अपने दफ्तर को चार दिन की और छुट्टी दे दो। क्या तुम अपनी चाची की देखभाल नहीं करना चाहते?" पीठ पर लैपटॉप का बैग लिए उस आदमी ने कहा, "मुझे तुम्हारी स्कूटर की चाबियां चाहिए, कृष्णा।"
"अरे, तुम्हारी कार को क्या हुआ?"

"प्रकाश ने एक जगह बताई है। वहां कोई कार नहीं जाएगी। साथ ही, अगर आप दोपहिया वाहन पर हैं, तो आप हेलमेट से अपना चेहरा ढक सकते हैं।"
"मेरी स्कूटी की गारंटी," उसने चाबी आगे बढ़ाते हुए चेतावनी दी।
"मैं इसे पूरा भरकर वापस लाऊंगा। चिंता मत करो..." उसने कहा, हेलमेट पहना, एक्सीलरेटर दबाया और इतनी तेज़ गति से चल पड़ा कि कृष्णातुलसी को अपनी स्कूटी की बहुत चिंता होने लगी।
"देखो बच्चा कितनी तेज़ी से स्कूटी चला रहा है," सुजाता ने बड़बड़ाती हुई लड़की के पीछे से आवाज़ लगाई।
"वह बचपन से ही ऐसा है। हर काम में तेज... हर चीज में लापरवाह। वह एक मिनट भी कहीं नहीं बैठता," उसने गर्व से घोषणा की।
एकदम बदमाश, उसे इतना गर्व क्यों है... उसने मन ही मन सोचा, "अरे, चाची, क्या आपके बेटे ने आपकी प्रेम कहानी पहली फिल्म से चुराई है? दूसरी फिल्म की कहानी के साथ वह क्या कर रहा है? उसने इसे किससे चुराया है?"
"पूरी दुनिया में प्यार बरस रहा है। इसे चुराकर कहानी बनाने की कोई ज़रूरत नहीं है। साथ ही, उसकी कल्पनाशीलता भी कमाल की है। उसने हमारी प्रेम कहानी को ही नहीं बनाया। उसने कहा कि उसने सिर्फ़ एक छोटा सा दृश्य डाला है। कृष्णा, क्या हम वो फ़िल्म देख सकते हैं?"
"कौन सी तस्वीर?" उसने उत्साह से पूछा।
"अश्वथ की प्रेम कहानी एक खूबसूरत तस्वीर है।"
"ओह, आंटी, क्या यह ऐसी फिल्म है जिसे आपको अपने परिवार के साथ देखना चाहिए?"
"तुम बहुत ज्यादा बोलते हो! मैंने सुना था कि यह एक सामान्य प्रेम कहानी है। मैं फिल्म लगा देती हूँ और देख लेती हूँ," सुजाता ने मजबूरी में कहा, और टीवी पर फिल्म लगाने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा और दोनों बैठ गए।
कृष्णाथुलसी सोच रहा था कि वह और आंटी फिल्म के कुछ अंतरंग दृश्य कैसे देखेंगे, वहीं सुजाता बिना किसी रुकावट के फिल्म में मग्न थी। उसने आश्चर्य से उसकी ओर देखा और फिल्म पर ध्यान केंद्रित किया।

धीरे-धीरे, उसे लगा कि फिल्म उसे अपने भीतर उतार रही है। ढेर सारा मनोरंजन, थोड़ा भावुकतापूर्ण, खूबसूरत प्यार, संतोषजनक रोमांस। फिल्म की समीक्षा करते हुए उसे यही महसूस हुआ।

उस समय हम इस फिल्म को इतनी आसानी से कैसे नज़रअंदाज़ कर सकते थे? वह असमंजस में थी।

"क्या, कृष्ण, तुम्हें यह तस्वीर पसंद आई?" सुजाता ने सहमति में सिर हिलाते हुए पूछा।

"आम तौर पर, हर किसी को इस तरह की रोमांटिक फिल्में पसंद नहीं आतीं। इन्हें सिर्फ वही लोग पसंद करते हैं जो प्यार में होते हैं। उस दिन आपका मूड चाहे जैसा भी रहा हो... आपको फिल्म पसंद नहीं आई।"

जब सुजाता ने मुस्कुराते हुए कहा, "क्या जिस प्यार को मैं पहले पसंद नहीं करती थी, वह आज मुझे पसंद करने लगा है?" तो कृष्णातुलसी की उलझन और बढ़ गई।

"उस दिन ऑफिस में मैं काफी तनाव में थी। आज मेरा मन आराम करने और फिल्म देखने का कर रहा है। चलिए खाना खाते हैं, आंटी।" खाना गर्म करने वाली महिला के मन में प्यार का जादू पूरी तरह से बैठ चुका था।

"आपकी स्कूटी अभी भी चल रही है। यह एक चमत्कार है," उस शाम चाबी देने वाले व्यक्ति ने बहुत थके हुए अंदाज में कहा।

“आप बहुत सुंदर लग रहे हैं, उत्करप्पा,” सुजाता ने कहा। “अपने बेटे से कहिए कि वह अपने बाल और दाढ़ी कटवा ले। तभी वह अपनी आँखों से देख पाएगा।” उसने मुंह बनाकर उसे डांटा, “मैं अपने दोस्तों से मिलने जा रही हूँ, आंटी,” और चली गई।

लव सकुनी देखने के बाद से ही वह अश्वथ का सामना करने में हिचकिचा रही थी। उसके जाने के पाँच मिनट बाद ही घर के दरवाजे पर दस्तक हुई। अश्वथ का चेहरा गुस्से से लाल हो गया जब उसने दरवाजा खोला। "तुम यहाँ क्यों आई हो?" उसने क्रोधित होकर पूछा।

दोस्तों से मिलने के बाद, वह वापस लौटी, दरवाजे पर अपनी स्कूटी खड़ी की, अंदर गई और सोफे पर बैठे अश्वथ के सामने गुस्से से खड़ी हो गई। "अरे, तुम्हें अक्ल है क्या? तुमने स्कूटी खरीदी है, क्या तुम्हें पता नहीं कि इसमें पेट्रोल भरना पड़ता है? मैं बीच में रुक-रुक कर एक

किलोमीटर तक स्कूटी चला चुकी हूँ," उसने चिल्लाते हुए अपने हाथ सीधे अश्वथ के चेहरे पर दे मारे।
"तुम पढ़ी-लिखी महिला हो, है ना? क्या तुम पेट्रोल चेक किए बिना गाड़ी ले जाओगी?" अश्वथ भी उससे लड़ने के लिए तैयार था।
सामने बैठे व्यक्ति की घूरती निगाहों को देखकर अश्वथ थोड़ा शर्मिंदा होकर जाग गया। कृष्णातुलसी ने उसी दिशा में देखा जिधर उसकी निगाहें गई थीं और "आह" कहा, उसका मुंह सचमुच खुला रह गया और वह कांप रही थी।
निरंजन सामने वाले सोफे पर बैठा उन्हें ध्यान से देख रहा था।

11

कृष्णातुलसी ने लाख कोशिश की, लेकिन उसे नींद नहीं आ रही थी। जो बातें उसने सुनी थीं, वे अब भी उसके मन में गूंज रही थीं और उसकी पलकें बंद नहीं हो रही थीं। उसने कमरे का दरवाजा खोला और बालकनी में आते ही अपनी भौंहें ऊपर उठाईं, यह सोचकर कि शायद वह थोड़ी देर ताजी हवा लेने के लिए रुक जाए। अश्वथ पहले ही आ चुका था और वहीं खड़ा था। उसके मुंह में सिगरेट थी।
"अब क्या वजह है?" पीछे से धुंआ उड़ाते हुए उस आदमी ने कहा, "मनबारम।"
जब भी वह सिगरेट पीता है, तो वह तनाव, चिंता या काम का बहाना ढूंढ लेता है। अब वह अवसादग्रस्त महसूस कर रहा है।
"कोई बहाना..."
नहीं, मुझे सच में ऐसा लग रहा है जैसे मैं अपने सिर पर एक बड़ा पत्थर ढो रहा हूँ।
वह बालकनी की छोटी रेलिंग पर थोड़ा झुककर बैठ गया।
"अपने सौतेले भाई से मिलना इतना मुश्किल क्यों है?"
"ऐसा लगता है कि सिद्धि ने तुम्हें सब कुछ बता दिया है," उसकी आवाज में थोड़ी झुंझलाहट थी।
"आंटी ने तुम्हारे बारे में मुझसे कुछ भी न छिपाने का फैसला कर लिया है। ये कैसा घमंड है, अपने माता-पिता और भाई-बहनों को पीछे छोड़ देना?"
"छी...मेरी उनसे बनती नहीं थी। मैं उनसे अलग हो गया।"

"यह किस तरह की गैरजिम्मेदाराना बात है? अगर आप अपने सारे कारोबार और संपत्ति छोड़कर इस तरह की फिल्म लेकर आते हैं, तो क्या वे भी नाराज नहीं होंगे? अगर आप इसके बारे में कुछ कहते हैं, तो क्या वे इसे गंभीरता से लेंगे?"
"मैंने अपना कारोबार नहीं छोड़ा। मैंने बस एक नया कारोबार शुरू किया और उसे अपने छोटे भाई को सौंप दिया।"
"क्या?"
"जी हां। मैंने एसजे सॉल्यूशंस, जिस कंपनी में आप काम करते हैं, के हर हिस्से को देखा और बनाया है। मैंने यह सब अपने माता-पिता को खुश करने और अपनी मनचाही नौकरी पर लौटने के लिए किया। एसजे सॉल्यूशंस कंपनी के ऐप में जो एकमात्र मैसेज टोन सुनाई देता है, वह भी मेरा ही डिज़ाइन है। उस कंपनी में मेरा इतना काम है।"
उसे याद आया कि उस दिन ऐप के मैसेज की टोन सुनकर वह कितना चौंक गया था। "तुम क्या पढ़ रहे थे?" उसने हिचकिचाते हुए पूछा।
मैंने अमेरिका में कंप्यूटर साइंस में एमएस की पढ़ाई की। मैंने यह सब अपने पिता की इच्छा के लिए किया। अब उन्हें मेरी इच्छा भी माननी होगी, है ना?
उसने एक बड़ी आईटी कंपनी के संस्थापक से पूछा था कि क्या उन्हें कोडिंग आती है। शर्मिंदगी छिपाने के लिए उसने अपना सिर नीचे कर लिया।
"लेकिन बच्चों वाले लोगों से बचना उचित नहीं है। उन्हें सिनेमा में अपनी रुचि के बारे में समझाएं।"
अश्वथ ने अपने हाथ में पकड़ी सिगरेट बुझा दी। वह मुड़ा और कृष्णतुलसी के सामने खड़ा हो गया। "कृष्ण, क्या तुम्हें कुछ पता है? मुझे किसी की सलाह पसंद नहीं आती। मुझे जो ज्ञान चाहिए, वह मेरे दिमाग में पहले से ही मौजूद है। मैं उसका इस्तेमाल खुद करूंगा। तो तुम..." उसने अपना मुंह हाथ से ढकते हुए और फिर अपना पिछला हाथ झटकाते हुए कहा... मानो कह रहा हो, "चुप रहो और जाओ।"
"अहंकारी व्यक्ति! मैं तुम्हारे अहंकार को जानते हुए भी तुम्हें सांत्वना देने आई हूँ! मुझे तुम्हें बताना ही होगा कि अकेले में बिना किसी सामान के सिगरेट पीते हुए इतना अहंकार करने से

तुम्हें जल्द ही कैंसर हो जाएगा..." उसने गुस्से में ये शब्द कहे, लेकिन अंत में अपनी बात पूरी न कर पाने के कारण सिर हिलाते हुए वहाँ से भाग गई।
"ओह...कृष्णा! क्या सिगरेट पीने वाले हर किसी को कैंसर हो ही जाता है?" रोते हुए भी उसकी आवाज व्यंग्यपूर्ण लग रही थी, और उसने जल्दी से दरवाजा बंद कर दिया।
अगली सुबह, सुजाता ने आमने-सामने बैठे उन दोनों को चिंता से देखा। "क्या तुम दोनों फिर से लड़ पड़े?"
"मैं नहीं, डार्लिंग। वो तो हमेशा मेरे लिए इतना हंगामा करती है," अश्वथ ने उसे घूरते हुए कहा।
"हे भगवान, कृष्ण! मैंने कल आपसे उस बच्चे के बारे में विस्तार से बात की थी!"
"अहा! अपने गिलहरी जैसे बच्चे को उठाओ और खुद अपनी कमर पर रख लो। यह बच्चा किसी से संबंधित नहीं है, कोई भी इस बच्चे के साथ परिवार नहीं बना सकता," उसने कहा और फिर वह ऊपर गई और उसके कमरे से सिगरेट के पैकेट लाकर उसके सामने फेंक दिए।
"लो, आज ही इसे पूरा पी लो। अगर तुम्हारे पास दस नहीं बचे तो मुझे बता देना, मैं ऑफिस से वापस आकर दस और पैकेट खरीद लूंगा।"
अश्वथ ने तीखी आवाज़ में सीटी बजाई। "सुजा डार्लिंग, क्या तुमने हमारी दोस्ती को इतना मजबूत होते देखा है कि तुम मुझे सिगरेट खरीदकर दे सकती हो?"
"मौसी, मेरे कोई दोस्त नहीं हैं। मेरी सबसे बड़ी दुश्मन आपकी गिलहरी है। उससे कहिए कि वह मुझसे बात न करे।" उसने गुस्से में स्कूटी स्टार्ट की और उड़ गई।
"उन्होंने आपका प्रोजेक्ट बदल दिया," नीलवन्नन ने ऑफिस में गुस्से से कहा।
"हमारे प्रोजेक्ट में इतनी बार बदलाव क्यों हो रहा है, यह आप किससे पूछ रहे हैं? मैं तो बस यह पूछ रही हूँ कि इसका मतलब क्या है," प्रिया और रंजनी खड़ी हो गईं और निरंजन के सामने आकर उसे रोकने की कोशिश करने लगीं।
"जब भी तुम मुझे देखते हो, तुम मेरी लोकेशन क्यों बदलते रहते हो?"
निरंजन आज बहुत शांत था। "मैंने तुम्हें जो प्रोजेक्ट पहले दिया था, वह थोड़ा मुश्किल होगा। यह प्रोजेक्ट ज्यादा तनावपूर्ण नहीं है। तुम बस इस पर काम करो।" उसकी आवाज़ बहुत ही विनम्र और शालीन लग रही थी, जिसे सुनकर वह हैरान रह गई।

कारण कुछ ऐसा था जिसके बाद निरंजन ने कृष्णातुलसी के प्रति बहुत ही दयालु और परिपक्व व्यवहार किया। उसने कृष्णातुलसी के चेहरे को देखकर उसे नौकरी के बारे में बताया।
कार्यालय की चिंताओं से पूरी तरह मुक्त होकर, कृष्णातुलसी उत्साह के साथ वापस आने लगी। उस उत्साह का एक और कारण था।
कुछ दिनों से उसकी अश्वथ से मुलाकात नहीं हुई थी। वह जगह का जायजा लेने के लिए बार-बार बाहर घूमता रहता था। आधी रात से ज़्यादा समय तक उसे सामने वाले कमरे में उसकी आहट सुनाई देती रहती थी। वह अंदर ही रहती, खुद को ऊपर-नीचे से बंद कर लेती।
ओह! इस व्यक्ति को न देखना कितना अच्छा लग रहा है। उसने खुद से वादा किया था कि वह उसे अपने जीवन में फिर कभी नहीं देखेगी।
उस रविवार को, जब वे अपनी सहेलियों के साथ एक कॉफी शॉप में बैठकर हंस-हंसकर बातें कर रही थीं, तभी निरंजन उनकी ओर आया। प्रिया और रंजनी झट से उठ खड़ी हुईं और बोलीं, "क्यों न तुम एक पत्र लिखो? चलो, जो कॉफी हमने मंगाई है, उसे पी लेते हैं, बर्बाद न करें।" कृष्णातुलसी मजबूती से बैठी रही, और निरंजन के पास आते ही सहेलियाँ हिचकिचाते हुए आगे बढ़ीं।
वह मुस्कुराते हुए आया और कृष्णातुलसी के सामने बैठ गया, "हाय, काम कैसा चल रहा है? कोई मुश्किल तो नहीं है?"
"कोई बात नहीं," उसने धीमी आवाज़ में कहा।
"अगर कोई और समस्या हो तो मुझे बता दीजिए, मैं उसे तुरंत ठीक कर दूंगा।"
"अगर आप कुछ समय के लिए यह होमवर्क देना बंद कर दें तो अच्छा होगा।"
"वो... आजकल आपको ये नहीं देते।"
"मैं यहां इस समय काम करने वाले सभी लोगों की ओर से बोल रहा हूं, महोदय।"
निरंजन का जबड़ा कस गया। उसने अपना गुस्सा काबू में किया। नहीं, निरंजन... धैर्य रखो! उसे बहुत काम करना है।
"क्या इस एसजे का मतलब सुजाता जयरामन है, सर?" उसने मासूमियत से पूछा।
"क्या सुजा ने तुम्हें बताया?" उसने दांत पीसते हुए कहा।
"वे आपको क्यों बताएंगे, महोदय? कंपनी शुरू करने वाले व्यक्ति ने तो यही कहा है।"

"अश्वथ... बेवकूफ, क्या तुम सब कुछ छोड़ देना चाहते हो?" उसने बुदबुदाते हुए अपनी मुट्ठी भींच ली।
"आपने क्या कहा, महोदय?" कृष्णातुलसी ने शालीनता से अपना सिर झुकाया और अपने कान उनकी ओर घुमाए।
"यह वह कंपनी है जिसे अश्वथ ने अपनी प्यारी चाची के नाम पर शुरू किया था। जब वह थोड़ा बड़ा हुआ, तो उसने इसे मुझे सौंप दिया और सिनेमा जगत में चला गया," उन्होंने बेफिक्री से परिवार के बारे में बताते हुए कहा।
"अश्वत्था...भाई साहब, अपनी उम्र के हिसाब से आपको जो संपत्ति मिली है, उसका सम्मान कीजिए। तो आपने लड्डू जैसी कंपनी खरीद ली और अपने भाई को पीछे छोड़ दिया?"
"अरे तुलसी, तुम क्या कह रही हो? अभी भी इस कंपनी के सीईओ मेरे भाई हैं। मैं तो बस प्रबंध निदेशक हूँ। मेरे भाई को सिनेमा का बहुत शौक है, और उन्होंने कंपनी छोड़कर वहाँ काम करना शुरू किया क्योंकि वे इसमें कुछ हासिल करना चाहते थे।"
"आपको बिना किसी परेशानी के एक कंपनी भी मिल गई। बताइए, अब आप क्या चाहते हैं?"
"आओ... तुम अश्वत्थी हो..."
"भाई..."
"हम्म... मेरे भाई के लिए एक रेजिमेंट... आकर उसे बता दो... कि वह उससे शादी कर ले।"
"क्या?"
"हाँ, तुलसी अश्वथ के लिए लड़की ढूंढने को तैयार है। यहाँ तक कि उसके माता-पिता और माँ ने भी झगड़ा किया और यह कहते हुए घर छोड़ दिया कि वह शादी नहीं करेगी। सुजाता इतने दिनों से बिना किसी को बताए सिद्धि के घर पर रह रही है। रास्ते में मेरी मुलाकात सिद्धि और अश्विन से हुई और मैं बाद में उनके घर वापस आ गई। सिद्धि ने बताया कि आप और अश्विन बहुत अच्छे दोस्त हैं। सिद्धि अश्विन को मना नहीं पा रही है। आपको ही अश्विन को शादी के लिए राजी करना होगा और हमारे परिवार को फिर से एक करना होगा। कृपया तुलसी..."
कृष्णातुलसी, जिसने निरंजन से विनती की थी, थककर बैठ गई।
अश्वत की शादी... मैं खुद ही तय कर लूंगी... उसे चक्कर आने लगा।

12

कृष्णाथुलसी सामने वाले कमरे में हलचल का इंतज़ार कर रही थी। आधी रात के 12 बजे के बाद अश्वथ के आने की आवाज़ सुनकर वह जाग उठी। या तो वह सुबह दरवाज़ा बंद करके चैन से सो रहा होगा, या फिर उसके जागने से पहले ही उठकर बाहर चला गया होगा। सुजाता ने बताया कि वह बहुत व्यस्त है क्योंकि उसकी अगली फिल्म का काम शुरू हो चुका है।

"अरे, इतनी व्यस्तता क्यों है?" अश्वथ ने अविश्वास से कृष्णातुलसी की ओर देखा, जो कमरे के दरवाजे पर आकर पूछ रही थी।

"ओह, क्या तुम धरती की ओर मुड़कर उसे साफ करने जा रहे हो?" उसने व्यंग्यपूर्वक पूछा, अपना जूता घुमाते हुए और मोजे उतारते हुए।

"मैंने आपको कुछ दिनों से नहीं देखा है। इसलिए मैं अब आपसे बात करने आया हूं।"

"मैंने अपनी अगली फिल्म 'कृष्णा' की शूटिंग शुरू कर दी है। बहुत काम बाकी है। जब से मैं सिद्धि के घर आकर रुकी हूँ, मेरा तनाव कम हो गया है और मन शांत है। अगली फिल्म के लिए मेरे पास कई नए विचार हैं। मैं छह महीने में फिल्म पूरी करने की योजना बना रही हूँ।" उसने हिचकिचाते हुए बोल रहे उस व्यक्ति को ध्यान से देखा।

वह अचानक उठा, उसके पास आया और सीधे उसके चेहरे पर फूँक मारी। "क्या तुम्हारा मन नहीं भरा?"

वह सोच रही थी कि अगर कोई शराबी घर आ जाए तो वह उससे कैसे बात करेगी। लेकिन जब उसने इस बारे में सोचकर उसकी शंका दूर कर दी तो वह निराश हो गई।

"क्या बात है?" उसने भौंहें चढ़ाकर पूछा, निरंजन के गुस्से को थोड़ा महसूस करते हुए, मन ही मन उसे समझने की कोशिश कर रही थी। भाई का गुस्सा छोटे भाई के लिए एक जैसा ही होता है। इस तरह व्यवहार करने वाला नायक भी एक जैसा ही होता है। तो, यही है अश्वत्थमन, जो इन सब का मूल है।

उसने हल्के से गला साफ किया और कहा, "मुझे आपसे थोड़ी देर बात करनी है।" वह अनिच्छा से कमरे में दाखिल हुई और उसे अंदर आने का इशारा किया।

"डरिए मत, मैं हर समय आपको फोन नहीं करूंगा," उसने अचंभित होकर उसकी ओर देखा। "क्योंकि..." वह रुका, उसे सस्पेंस में रखते हुए, और उसने उत्सुकता से उसकी ओर देखा।

"तुम उस तरह की औरत नहीं हो... बहुत साफ-सुथरी... पवित्र... मैं तुम्हें जानता हूँ।" उसकी आवाज़ में बहुत निराशा झलक रही थी, क्योंकि वह इस तरह जवाब का इंतज़ार कर रहा था।

"तुमने ही तो कहा था कि तुम शराब नहीं पीते! मुझे तो बोरबन बनाना भी पसंद नहीं! ठीक है, मैंने कंपनी के लिए किसी और को रख लिया है। लेकिन अगर कभी तुम्हारा थोड़ा-बहुत बनाने का मन करे, कृष्णा, तो मुझे पहले बता देना। मैं तुम्हें तरीका बताकर तुम्हारी मदद करूँगा," उन्होंने अपनी बात समाप्त की।

कृष्णातुलसी को अपने भीतर उमड़ रहे गुस्से से भाग जाने का मन कर रहा था, वह सोच रही थी, "अरे बेवकूफ, शराबी मत बनो!" और खुद को अपने कमरे में बंद कर लेना चाहती थी। लेकिन उसने दांत पीसकर उसे घूरते हुए वहीं खड़ी रही।

"ओह, क्या तुम अभी भी यहीं खड़े हो? अगर तुम्हें मुझसे कुछ कहना है, तो बैठ जाओ और मुझे बताओ, कृष्णा," उसने सामने वाले सोफे की ओर इशारा किया।

"तुम शादी क्यों नहीं कर लेते?" उसने सीधे मुद्दे पर बात की।

"क्या...?"

"आपके भाई... निरंजन साहब... बहुत परेशान हैं। अगर हमारी शादी हो जाती है, तो हम परिवार के रूप में, मम्मी-पापा, साथ रहना शुरू कर सकते हैं, है ना?"

कृष्णातुलसी पूरी तरह से जागते हुए उसे देख रहा था, जब वह कुछ खोजते हुए अपना सिर और शरीर घुमा रहा था।

"तुम दलाल कब से बन गए? अगर हिम्मत होती तो मेरे लिए कोई औरत ले आते, जिसकी मैं देखभाल कर सकूँ? तुम..." कुछ न सूझने पर उसने अपने उतारे हुए जूतों में से एक जूता उठा लिया।

उसने अपना जूता ऐसे उठाया मानो उसे मारने वाला हो, "अरे, भाग जा, वरना मैं बिना मूंजी मोगार की तरफ देखे ही तुझे इससे मारूंगा।" उसने अपना जूता लहराया।

"क्या हाल है, टी?" उसने दोनों हाथ कमर पर रखते हुए चिल्लाकर कहा।

"ओह, अमांडा नीली! अगर तुम दोबारा कभी मेरे सामने इस तरह खड़ी हुई, तो मैं तुम्हारी खूब पिटाई करूँगा।" वह झट से खड़ा हो गया, यह सोचकर कि वह दोबारा वहाँ क्यों खड़ी होगी!
कमरे के बाहर खड़ी होकर उसने दोनों हाथ ऊपर उठाए और उसे कोसते हुए कहा, "क्या तुम इंसान हो? तुमसे कौन शादी करेगा? आज के ज़माने में किसी इंसान से शादी करके जीना बहुत बड़ी बात है। क्या तुम्हारे जैसे राक्षस का परिवार भी हो सकता है? तुम ऐसे ही बिना शादी किए बैठे रहोगे जब तक कि तुम पूरी तरह थक न जाओ..."
"एडिंगंगंग..." अश्वथ का जूता, जिस पर उसने निशाना साधा था, उसे अचूक रूप से लगा, और वह अपनी प्रतिज्ञा का अंतिम शब्द पूरा किए बिना ही झट से अपने कमरे में घुस गई और दरवाजा बंद कर लिया।
अगले दिन, उसे निरंजन से प्यार हो गया, जिसने उसे दफ्तर में उत्सुकता से देखा था। "अगर मैं शादी की बात करूंगी तो तुम्हारा भाई आकर मुझे चप्पलों से पीटेगा। तुम्हारा परिवार कैसा है...?"
निरंजन अचानक जाग गया और अपने हाथों में सिर रखकर बैठ गया। "अब मैं क्या करूँ?"
"कुछ करो, मुझे उस राक्षस से बात करने के लिए दोबारा अकेले मत भेजो।"
कृष्णातुलसी के स्पष्ट बोलने के बाद भी, निरंजन उसे ढूंढते हुए घर आया। "अगर तुम बोलो भी नहीं, तो मुझे कुछ सुझाव क्यों नहीं देती, तुलसी?"
"तो आपके भाई की शादी में आपकी क्या दिलचस्पी है?"
"यह...आएगा...इससे हमारा परिवार एक साथ आएगा।"
"तो फिर एक काम करो। सबसे पहले, अपने माता-पिता को लेकर सुजाता आंटी से बात करो। मुझे पता है कि तुम्हारे भाई की कमजोरी आंटी हैं। अगर तुम उन्हें मना लोगे, तो बाकी सब ठीक हो जाएगा।"
अगले दिन निरंजन अपनी मां कंचना को वापस ले आया। दोनों कुछ मिनट तक एक-दूसरे को देखते रहे, फिर निरंजन ने व्यंग्यपूर्वक कहा, "क्या हम बाहर चलें?"
"तुमने मुझे बताना क्यों नहीं बंद किया?" कंचना ने कहा, तभी कृष्णातुलसी और निरंजन बाहर आए।

"बहन, तुम अब भी देवी की तरह ही सुंदर हो," सुजाता ने कहा, जबकि कंचना ने आश्चर्य से अपनी बहन के हाथों को पकड़ रखा था और उसे निहार रही थी।
"सुजा, तुम इतनी बदल गई हो क्या? चूड़ीदार बॉब बट... तुम इतनी आधुनिक कैसे हो गई?"
कंचना ने गले में गहनों का गुच्छा और कानों व नाक में हीरे के झुमके पहने थे। सुजाता ने लंबी स्कर्ट टॉप, पटियाला पैंट, गले में पतली चेन और कानों में जड़े झुमके पहने थे।
सुजाता झुककर अपनी शक्ल देखकर गर्व से मुस्कुराई। "यह सब अच्छू की वजह से है। तीन महीने में ही उसने मुझे पूरी तरह बदल दिया है। मैं योगा क्लास, स्विमिंग और शतरंज भी सीख रही हूँ। उसने कहा है कि अगले हफ्ते से पियानो क्लास भी शुरू कर देगा। पिछले महीने मेरा एक छोटा सा एक्सीडेंट हो गया था। वो पैर का दर्द भी एक हफ्ते में ठीक हो गया। अच्छू और कृष्णा मुझे घर में रहने से मना करते रहते हैं और बाहर जाने के लिए कहते रहते हैं। आजकल तो मुझे कूल्हे या जोड़ों में दर्द भी नहीं होता, आप जानते हैं!"
कंचना की आँखों में आँसू आ गए। अश्वथ ने उसे ये सब बातें भी बताई थीं। लेकिन उसने इसे बचकाना समझकर नज़रअंदाज़ कर दिया और खानदानी सम्मान के तौर पर कमरबंद और हीरे को पहने हुए, गर्दन और पीठ में दर्द की शिकायत करते हुए आराम करने के लिए लेट गई।
"सूजा, तुम्हें यहाँ अकेले क्यों रहना है? मैं हमारे साथ आ जाऊँगी।"
सुजाता मुस्कुराई और बोली, "क्या मैं आपके घर से पियानो क्लास जा सकती हूँ, बहन?"
कंचना फूट-फूटकर रोने लगी और अपनी छोटी बहन को गले लगा लिया।

13

"मुझे समझ नहीं आ रहा, तुम अपने भाई को लेकर इतने चिंतित क्यों हो?" कृष्णातुलसी ने बाहर खड़े होकर निरंजन से पूछा।
"हां, मुझे हमेशा से अपने भाई और अपने परिवार की बहुत परवाह रही है," निरंजन ने गर्व से घोषणा की।
"ओह... एक बार जब आपके भाई की शादी हो जाएगी, तो आप एक अच्छे बेटे की तरह कंपनी उसे सौंप देंगे और खुद अलग हो जाएंगे, है ना?"

निरंजन जाग उठा और बोला, "वो भाई आया और कहने लगा कि उसे आईटी क्षेत्र में कोई दिलचस्पी नहीं है।"
"ठीक है, मान लीजिए कि कल ब्याज आता है।"
एक भाई कभी भी अपना दिया हुआ सामान वापस नहीं लेता।
"यह बहुत आशाजनक है, लेकिन मुझे लगता है कि आपका भाई शादी करने और परिवार शुरू करने के बाद निश्चित रूप से इस पेशे में प्रवेश करेगा।"
निरंजन की आँखों में भय झलक रहा था, "क्या तुम्हारा यही मतलब है?" उसने अपना सिर खुजलाया।
अरे बाप रे! तुमने तो सब गड़बड़ कर दिया! अब मुझे बस मछली पकड़नी है, कृष्णतुलसी ने सोचा, "अब बताइए, श्रीमान। आप अपने भाई की शादी को लेकर इतने चिंतित क्यों हैं?"
"मेरे पिता आए और उन्होंने मुझसे कहा कि वे मेरे भाई की शादी होने के बाद ही मेरी शादी के बारे में बात करेंगे..."
"क्या इसीलिए तुम अपने भाई की शादी करवाने की कोशिश कर रहे हो? क्या ये सब सिर्फ इस लड़की के लिए है?" उसने अपने फोन पर उसे तस्वीर दिखाई।
"आपको सिंथुजा की यह तस्वीर कैसी लगी?"
"देखो, यहाँ तुम्हारी एक तस्वीर भी है..." उसने फोन की स्क्रीन घुमाई और पास में खड़े निरंजन को दिखाई।
निरंजन असमंजस में था। "आपको यह सब कैसे पता?" उसने थोड़ी घबराहट के साथ कृष्णा तुलसी की ओर देखा।
मुझे सब पता है। मैं तुम्हें अपनी तरफ से सबसे अच्छी सलाह दूंगी। अपने भाई को इस प्रेम प्रसंग के बारे में पता मत चलने देना। वह आदमी बहुत खतरनाक है। क्या तुम्हें लगता है कि वह जाकर तुम्हारे लिए प्रेम प्रसंग करवाएगा? वह सिंधु के घर जाकर तुम्हारे बारे में बातें करेगा और यहाँ तक कि प्रेम प्रसंग भी तोड़ देगा, फिर चला जाएगा। वह बहुत खतरनाक आदमी है। सावधान रहना...
"अश्वथ ऐसा क्यों करेगा?"

"तुम इस प्यार की वजह से उस पर शादी करने का दबाव डाल रहे हो। अगर तुम बिना प्यार के ऐसा करोगे तो..." पिता मन ही मन यही सोच रहा है।
निरंजन माथे को तकिये पर टिकाकर बैठ गया, और कृष्णातुलसी को राहत मिली। हम्म... एक तरह से भाई-बहन अलग हो गए थे। उसे उसकी शादी करवा देनी चाहिए... उसे प्रेम में डाल देना चाहिए... बीच में मुझे हनुमान जी के लिए काम करना है। मैं देख रही हूँ कि तुम दोनों, जिन्होंने मुझे काम पर और घर पर बेचैन कर दिया था, कितने शांत हो। उसने अपने भाइयों को धोखा दिया।
"तो आप तभी आते हैं जब आपके देवर की शादी होती है, है ना?" कंचना ने घर से बाहर आते हुए पूछा।
"मैं तब आई जब हमारे पिता का निधन हुआ। फिर मैं तब आई जब हमारी माँ का निधन हुआ। लेकिन मैं वहाँ रहना नहीं चाहती थी और यहाँ आकर लकवाग्रस्त हो गई," सुजाता के होठों से एक कड़वा आँसू बह निकला।
कंचना का चेहरा पीला पड़ गया था। जब उसके पिता का निधन हुआ, तो कंचना के पति नल्लाथंबी ने सुजाता को घर में प्रवेश नहीं करने दिया। उन्होंने उसे यह कहकर बाहर भेज दिया कि अगर वह अंदर आई तो उसके मामा की आत्मा को शांति नहीं मिलेगी। जब उसकी माता का निधन हुआ, तो कंचना समेत किसी ने भी सुजाता से एक शब्द भी नहीं कहा। उसने पीछे मुड़कर तक नहीं देखा। सुजाता के पास केवल अश्विन ही बैठा था।
बहन की याद दिलाए जाने पर कंचना रो पड़ी। "मैंने तुम्हें अकेला नहीं छोड़ा था, सुजा। तुम्हारे पिता ने मुझे ऐसा करने के लिए मजबूर किया था। इतने वर्षों बाद अब जाकर मुझे तुम्हारे पिता का विरोध करने का साहस मिला है।"
"ठीक है, चलो बीते दिनों की बात नहीं करते," सुजाता ने अपनी बहन को शांत करने की कोशिश की, "आप ऐसा कैसे कर सकती हैं, चाची? वे इतने सालों से आपकी संपत्ति का आनंद ले रहे हैं? गलती तो आपके पिता की ही है। उन्हें खुद आकर आपसे बात करनी चाहिए थी।"
कंचना ने मुड़कर देखा तो घर के बाहर बने छोटे से आंगन से कुछ आवाज़ आ रही थी। वहां कृष्णातुलसी और निरंजन बैठे थे।

"ये औरत कौन है?" कंचना ने पूछा, "हमारी कंपनी बंद है, माँ।" सुजाता ने निरंजन की बात को रोकने के लिए हाथ हिलाया।
"वह मेरी दोस्त है। पिछले दो सालों में, भले ही मेरे सारे निजी रिश्ते टूट गए हों, मैं सिर्फ उसकी दयालुता की वजह से ही जी पा रही हूँ। उसका परिचय इस बात से नहीं है कि वह आपकी कंपनी में कर्मचारी है, बल्कि इस बात से है कि वह आपकी चाची की सहेली है।"
सुजाता ने दृढ़ स्वर में बोलते हुए कंचना कृष्णतुलसी की ओर मुस्कुराते हुए कहा, "मेरी बहन का इतना अच्छा ख्याल रखने के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। हमारे अश्वथ की शादी जल्द ही होने वाली है। हम आपको भी निमंत्रण भेज रहे हैं। इसे देखना न भूलें।"
"अच्छू की शादी उसके बिना नहीं होगी, बहन," सुजाता ने कंचना की बहन को ध्यान से देखते हुए कहा।
"सुजा, तुम्हें देखकर तो तुम अपने पोते को पालने वाली दादी जैसी नहीं लगतीं। तुम बहुत जवान दिखती हो," कंचना ने बात बदलते हुए कहा।
“यह सब अचु का क्या काम है?” सुजाता ने गर्व से कहा, “चुड़ीतार सिर्फ तैरता ही नहीं, सिद्धि के लिए शराब भी खरीदता है।” पास से कृष्णतुलसी की बड़बड़ाहट सुनकर निरंजन जैसे जाग उठा।
"क्या आंटी शराब पिएंगी?" उसने धीमी आवाज में कहा।
"पक्षी भी उस पेड़ से पानी पीते हैं," निरंजन ने जल्दी से उठकर कृष्ण तुलसी को नारियल का पेड़ दिखाया।
"क्या हम जा सकते हैं?"
कंचना ने कृष्णतुलसी की ओर विचारपूर्वक पीछे मुड़कर देखा और चली गई।
"ये क्या है चाची, जब तीर चलाने के लिए कोई है ही नहीं, तो सिर्फ तीर आकर शांति की बातें करता है?"
"इसीलिए तो तुमने जिससे बात कर रहे थे उसे आने के लिए कहा था! वो खुद भी आ सकता है," सुजाता मुस्कुराई। ठीक वैसा ही हुआ जैसा उसने कहा था।

अगले दिन, रविवार को, कृष्णातुलसी देर से उठीं, आराम से स्नान किया और अपने बाल सुखाए। अश्वथ आधी रात के बाद घर लौटा था। जब वह सोच ही रही थीं कि वह दरवाजा बंद करके सो रहा होगा, तभी दरवाजे पर दस्तक हुई।

अगर आप मन में 'राक्षस' का ख्याल भी लाएँ, तो वह तुरंत आकर खड़ा हो जाएगा। मैंने कराहते हुए दरवाजा खोला, और वहाँ अश्वथ खड़ा था, पूरी तरह जागा नहीं था, उसकी दाढ़ी और बाल बेजान से लटके हुए थे, ऐसा लग रहा था जैसे वह सोने ही वाला हो।

जब से सुजाता ने उसे अपनी दाढ़ी छोटी करने के लिए कहा है, तब से वह दिखावे के लिए उसे और भी लंबा बढ़ा रहा है।

"कृष्णा! क्या मैं सिर्फ एक घंटे के लिए आपके कमरे में रह सकता हूँ?" उसने विनती की।

उसने अविश्वास भरी निगाहों से उसकी ओर देखा। "क्यों?"

"कृपया, कोई नीचे आया है। मैं उनसे मिलना नहीं चाहता। अगर वे यहां आकर पूछें, तो उन्हें बता देना कि मैं यहां नहीं हूं। मैं कहीं गया हूं," उसने उसका कंधा छूते हुए और उसे दूर धकेलते हुए कहा और कमरे में चला गया।

कृष्णातुलसी को बात समझ नहीं आई, इसलिए वह सीढ़ियों से आधा नीचे उतर गई और धीरे से घर के अंदर झाँका, जहाँ कंचना और नल्लाथंबी बैठी थीं।

ओह... क्या आपके पिता अपने माता-पिता से मिलने के लिए इतने अनिच्छुक हैं?

क्या हमें उन्हें बताना चाहिए कि वह यहाँ छिपा हुआ है? वह सोचने लगी।

"मैं आपकी संपत्ति के हिस्से यथावत रखूंगा। अगर आप आकर हस्ताक्षर कर दें, तो मैं सब कुछ आपके नाम पर हस्तांतरित कर दूंगा।" जब नल्लाथंबी व्यंग्यपूर्ण लहजे में सुजाता से ये बातें कर रही थी, तो कृष्णातुलसी क्रोधित हो गई।

यहां इवान अपने पिता की संपत्ति की नीलामी कर रहा है... इवान, जो अचानक एक स्त्री में बदल गया था, और भी गुस्से में था। वहीं अश्वथ अपने कमरे में बिस्तर पर लेटा हुआ सो रहा था। वह बिस्तर पर बिछी उसकी शॉल को कंबल की तरह ओढ़े हुए था।

ऐसी स्थिति में वह कैसे सोता है? उसने डिब्बे से तकिया निकाला और उसकी पीठ पर रख दिया। "क्या तुम कुंभकर्ण हो? उठो।"

"अरे कृष्णा! शांत हो जाओ, मैं कल सिर्फ एक घंटा सोया था। मुझे नींद आ रही है।" वह लेटते हुए चिल्लाया और पीछे हाथ बढ़ाकर तकिया पकड़ लिया। तकिया कसकर पकड़े हुए वह भी उसके ऊपर गिर पड़ी।

"अच्छा, ऐसे ही रहो। मैं सो रहा हूँ।" वह उठा और गिरी हुई महिला को आराम से उठाकर सोने लगा। "साई...साई..." वह जाग उठी और रुक गई। नल्लाथंबी और कंचना कमरे के दरवाजे पर खड़ी थीं।

"क...क...आए?" वह हकलाते हुए बोली, और वे चले गए।

"अरे, क्या हुआ?" अश्वथ ने पूछा, "उ...तुम्हारे म...म...पापा..." वह हकलाते हुए बोली।

वह झट से उठ बैठा और बोला, "क्या तुम ठीक हो?"

उसने बिना कुछ कहे बस सिर हिलाया। "बहुत अच्छा। मेरा एक काम और बचा है। अगर आप थोड़ी देर सोफे पर बैठ कर आराम कर लें, तो मैं अच्छी नींद सो जाऊंगी और उठ जाऊंगी। बहुत काम है।" वह फिर लेट गया।

"साई... तुम एक इंसान हो..." वह कमरे से बाहर निकली और हॉल के सोफे पर बैठ गई। उसका पूरा शरीर अश्वत के स्पर्श से सराबोर था।

वह सोच-विचार में डूबी बैठी थी, अपने अभी भी रोमांचित शरीर को थामे हुए थी, किसी और चीज के बारे में सोचने से भी डर रही थी।

दो घंटे की गहरी नींद के बाद अश्वथ जागा तो उसने पाया कि कृष्णातुलसी वहाँ नहीं थी। जाँच करने पर पता चला कि वह चेन्नई में भी नहीं थी।

14

निरंजन ने भयभीत होकर अश्वथ की ओर देखा, जो पास ही में गंभीर चेहरे के साथ बैठा था।

"अस्वत... अन्ना..." जब दो-तीन बार पुकारने पर भी अश्वत नहीं लौटा, तो उसने उसे अपने बाएं हाथ से पकड़कर पुकारा, "अन्ना।"

"आपने मुझे फोन किया था?"

"हाँ। चलो... क्या हमें अभी वहाँ जाना होगा?"

"इसीलिए उसने लोकेशन भेजी..."

निरंजन का चेहरा बेहद उदास था। कृष्णातुलसी ने उसे जगह भेजते हुए कहा था, "मेरी शादी हो रही है। आपको जरूर आना चाहिए, महोदय।"
अश्वथ मेरा हाथ पकड़कर मुझे घसीटते हुए कह रहा है, "चलो चलते हैं।"
"मेरी बहन ने मुझे औपचारिकता के तौर पर डॉक्टरेट की डिग्री लेने को कहा। मैं तुरंत जाकर डॉक्टर की डिग्री कैसे ले सकता हूँ?"
"क्या औपचारिकता के बारे में आपको बताने वाला व्यक्ति आपको सभी स्थानों की जानकारी भेजेगा?"
निरंजन को भी यही शंका थी। वह सोच रहा था कि वह उससे अपनी ही कंपनी में काम करने वाले एक कर्मचारी की शादी में आने की उम्मीद कैसे कर सकती है। लेकिन यहाँ वह उसे थप्पड़ मारकर उसके गृहनगर की ओर चल पड़ा।
"भाई, क्या तुम और तुलसी एक-दूसरे से प्यार करते हो?" उसने हिचकिचाते हुए पूछा।
"अरे, क्या हालचाल है भाई... लगता है तुम किसी को फोन कर रहे हो। हमेशा की तरह मुझे अश्वथने ही बुलाना।"
"नहीं, तुलसी ने कहा था कि बड़े भाई के सम्मान में आपको मुझे अन्ना कहकर बुलाना चाहिए।"
असवत के चेहरे पर शिकन आ गई।
"ओह... वो तुम्हारे साथ भी वही कर रही है..." सुजाता कार की पिछली सीट से हंसते हुए बोली।
कंपनी भी मेरी मौसी के नाम पर है। सीईओ अश्वथ हैं। जब ये दोनों मुझे दबे स्वर में धमका रही हैं कि कृष्णा तुमसे कहीं बेहतर काम कर रही है, तो मुझे अपनी जगह बनाए रखने के लिए उनकी बात माननी पड़ती है। इसके अलावा, मेरी सिंधुजा अलग है। अगर ये तुलसी भी मदद नहीं करती, तो मेरा प्यार भी नाकामयाब लगेगा... निरंजन मन ही मन सोच रहा था।
"जब तुम वहां जाओ, तो यह सुनिश्चित कर लेना कि कृष्ण तुम्हें किसी भी कारण से प्यार करते हों," सुजाता ने निरंजन पर किताब फेंकते हुए कहा।
"भाई... अश्वथ... भाई, क्या तुलसी तुमसे प्यार नहीं करती?"
"हम्म...मुझे ठीक से नहीं पता," अश्वथ ने कहा, "ओह नहीं," निरंजन चिल्लाया।

"अन्ना तुलसी का गाँव सचमुच एक जंगल है। उसके सभी रिश्तेदार बकरियों जैसी मूंछों और हंसिया लिए घूमते हैं। अगर उन्हें पता चल गया कि हम उस औरत की शादी रोकने आए हैं जो तुमसे प्यार नहीं करती, तो वे हमें काट कर वहीं दफना देंगे। अन्ना, तुम जो भी करो, थोड़ा सोच लो। प्लीज़..."
"भाई, यहीं पर तुम्हें मेरी मदद करनी होगी। तुम्हें आकर मुझे कृष्ण के प्रेम के बारे में बताना चाहिए।"
एक धूर्त आकृति निरंजन की आंखों के सामने हंसिया लहराते हुए पास आई। "भाई, मैं नहीं हूँ, सिद्धि को भेजो।"
"अरे, ये लोग मेरी चाची और मुझे अंदर नहीं जाने दे रहे हैं। उनकी कंपनी के बॉस होने के नाते, सिर्फ आप ही अंदर जा सकते हैं। आपको ही अंदर जाना होगा।"
निरंजन कांपते हाथों से गाड़ी चला रहा था, मानो किसी मेमने को बलि के लिए घसीटा जा रहा हो।

—----------

उनके जाने के कुछ ही देर बाद, सुजाता के घर के सामने रुकी कार से ड्राइवर बाहर निकला और किनारे से उनसे पूछताछ करने लगा।
"वे आधे घंटे पहले चले गए," उसने कार में बैठी महिला को बताया।
"निर्देशक महोदय, मैं आधे घंटे में आपको और करीब ले आती हूँ," उसने कहा और ड्राइवर को गाड़ी चलाने का आदेश दिया। वह अश्वत्थामणिन कादल सकुनी की नायिका मोनिशा थी।

—---------

"तुलसी, ये क्या अन्याय है? तुम्हारी माँ बीमार है इसलिए तुम्हें यहाँ बुलाया जा रहा है और शादी की ये सारी व्यवस्थाएँ की जा रही हैं? ये कैसे संभव है?"
कृष्णातुलसी शीशे के सामने खड़ी होकर अपने बिखरे बालों को संवार रही थी। उसने शांत भाव से कहा, "मेरी शादी मेरे दूल्हे से दो साल पहले हुई थी, इसलिए यह सब तुरंत संभव हो पाया।"
"क्या, तुम्हारी सगाई हो गई है?"

"हां! उस समय मैं अपने चाचा से डरकर नौकरी ढूंढने के लिए चेन्नई भाग गई थी। उन्होंने मुझे तीन साल काम करने और फिर शादी करने की शर्त पर चेन्नई वापस भेज दिया।"
"तो फिर वे अचानक अब शादी क्यों कर रहे हैं?"
"क्योंकि उन्हें मेरे प्रेम प्रसंग के बारे में पता चल गया था। किसी भले इंसान ने मेरी शादी करवा दी, इसलिए यह अचानक शादी हो गई।"
"क्या, तुम प्यार में हो?" दोनों अवाक रह गए।
मैं प्यार क्यों नहीं कर सकता?
"कौन?"
"हम्म... आपके पसंदीदा निर्देशक कादल सकुनी अश्वत्थामा," कृष्णातुलसी ने कहा, एक तौलिया लिया और उसे अपने कंधे पर रखा और बाथरूम में चली गई।
"ये क्या कह रही है?" दोनों दोस्तों ने सिर हिलाया।
—----------
"अरे, सेनबागैम, तुम्हारी बेटी कौन है? क्या तुमने ध्यान दिया?" मदासामी ने अपनी मूंछें मरोड़ते हुए पूछा।
"उसके दोस्त शहर से आए हुए हैं, है ना? वे भी कमरे में बातें कर रहे हैं?"
"तुम क्या कर रहे हो? चाहे कोई भी बात करे, उसकी बात पर पूरा ध्यान दो। तुमने इतना कुछ कहा, इसलिए मैंने शादी की जानकारी सिर्फ़ उसके दफ्तर में काम करने वालों को देने पर सहमति जताई। वह वहीं रहने लगी है, इसलिए कोई भी यहाँ न आए। याद रखना..." मदासामी ने अजीब तरह से बुदबुदाते हुए पूछा, "यह वेलन कहाँ है?" और वहाँ से चला गया।
"आप अब भी मुझे मेरे नाम से क्यों बुला रहे हैं? कल तक वह मेरा बेटा था, और आज से वह आपका दामाद है। क्या आपको दूल्हे को सम्मानपूर्वक नहीं बुलाना चाहिए?" नवनीथम मदासामी की बहन ने पूछा।
"ठीक है... ठीक है, लड़की को गले में ताबीज पहनने दो, सम्मान तो अपने आप आ जाएगा। अपने बेटे से कहो कि आज कहीं रुक जाए, कम से कम दूल्हे की जिम्मेदारी तो निभाए।"
"वह चावल का एक ढेर लेने के लिए टेनंथोपुला गया था, उसने उसे देखा और फिर चला गया। वह अब आएगा।"

—----------

ऊबड़-खाबड़ सड़क देखकर नल्लाथंबी का चेहरा उतर गया। "कितनी खराब सड़क है, क्या तुम्हें वाकई इसे पार करके अपने पैतृक मंदिर जाना ही है?" कंचना चिढ़ गई।

"मैं अपने घोड़े के लिए प्रार्थना कर रहा हूँ। अगर हम यह प्रार्थना पूरी कर लें, तो वह निश्चित रूप से हमारे पास लौट आएगा।"

"सिर्फ अश्वत ही नहीं, तुम्हारी बहन सुजाता को भी आना चाहिए। उसके लिए भी प्रार्थना करो।"

आपके व्यवसाय को उन दोनों के हस्ताक्षर की आवश्यकता है, और मुझे पता है कि इसीलिए आप यहाँ तक आए हैं। हर चीज के लिए।

"मैंने यह यात्रा इस उम्मीद के साथ शुरू की है कि देवी मलयम्मन मेरा सही मार्गदर्शन करेंगी," कंचना ने मन ही मन सोचा।

—---------

"निरंजन, नीचे जाओ और कृष्णा से बात करो, फिर वापस आकर इस पेड़ के पीछे गाड़ी खड़ी कर दो।"

"भाई, क्या तुम मुझे अंदर आने दोगे?" निरंजन ने कांपती हुई आवाज में पूछा।

"उसे बताओ कि वह कंपनी की बॉस है। उसे बताओ कि वह यहाँ शादी के लिए आई है। वे उसे अंदर आने देंगे।"

"अरे, तुम्हें किस बात का इतना डर है? अगर मैं तुम्हारी जगह होती, तो अब तक अंदर जाकर कृष्ण को वापस ले आती," सुजाता ने कहा। "तुम बच्चों जैसी बातें कर रही हो, तुम तो बिल्कुल खलनायिका हो," निरंजन ने उसकी तरफ देखते हुए कहा और नीचे उतरकर मंदिर की ओर चलने लगा।

—---------

"ड्राइवर, मुझे उस बाग में लोग दिख रहे हैं। जाकर वहाँ देखो," मोनिशा ने कहा, और ड्राइवर ने कार रोक दी और बाहर निकल गया।

जब मोनिशा ने देखा कि एक आदमी बाग के अंदर काम कर रहे मजदूरों की ओर पीठ करके खड़ा है, मानो उन्हें कुछ बता रहा हो, तो वह कार से बाहर निकली। "हेलो महोदय, मुझे एक पता चाहिए।"

वापस लौटे उस आदमी ने मोनिशा को देखा और उसकी आँखें इतनी चौड़ी हो गईं मानो वह फूट-फूट कर रो पड़ेगा। "तुम...तुम...तुम!"

"मैं मोनिशा हूँ, महोदय। मैं मलाइयम्मन मंदिर में एक शादी में शामिल होने आई हूँ। आपका नाम क्या है, महोदय?"

"मेरा नाम वेलन है। तुम प्रेम के लिए शुभ संकेत हो..."

"बस यही बात है, महोदय। वही उस फिल्म की नायिका हैं," मोनिशा के यह कहने पर वेलन आश्चर्यचकित रह गए।

"सर, आप बहुत ही सुंदर हैं। मुझे आपकी मदद चाहिए," मोनिशा ने मीठी आवाज में फुसफुसाते हुए कहा।

15

"हैलो महोदय। मैं निरंजन हूँ। आपकी बेटी कृष्णा तुलसी की कंपनी की प्रबंध निदेशक हैं। मैं उनसे मिलना चाहता हूँ और उन्हें बधाई देना चाहता हूँ। वह कहाँ हैं?"

मतासामी ने अपनी मूंछें मरोड़ते हुए निरंजन को ऊपर से नीचे तक देखा और कहा, "उस मंदिर के पीछे एक छोटा सा हॉल है। क्या वो वहीं है? जाओ, देखो, उससे बात करो और एक चाट खरीद लो। मैं शादी खत्म होने तक यहीं रुकना चाहता हूँ और फिर खाना खाऊंगा।"

निरंजन हॉल की ओर चल पड़ा।

"तुम किस बारे में बात कर रहे हो? क्या तुम अश्वत्थामन से प्यार करते हो?"

"मैं नहीं। वो मुझसे प्यार करता है।"

निरंजन इस भाषण को सुनकर स्तब्ध होकर बाहर खड़ा रहा।

"क्या वो वही है? तुमने उसे कब देखा था? उसने तुम्हें कैसे देखा? उसे तुमसे प्यार कैसे हुआ?"

प्रिया और रंजनी बारी-बारी से हमसे सवालों की बौछार करती रहीं।

"पिछले चार महीनों से सुजाता आंटी मेरे कमरे के ठीक सामने वाले कमरे में रह रही हैं।"

"क्या तुमने हमसे एक शब्द भी कहा, छोटी बच्ची? हमें कम से कम उनसे एक ऑटोग्राफ तो मिल जाना चाहिए था! लेकिन क्या वो सच में तुमसे प्यार करते हैं?"
"मुझे तो ऐसा ही लगता है। मैंने तो अपनी शादी की सारी जानकारी भी उसे दे दी थी। उसे अब तक छात्रावास में आ जाना चाहिए था।"
"अरे, मुझे समझ नहीं आ रहा। वही तो तुमसे प्यार करता है... तुम अपने चाचा से शादी करने जा रही हो। तुम्हें तो अपने चाचा पसंद ही नहीं हैं... कुछ तो गड़बड़ है," प्रिया ने अपना सिर खुजाया...
"कल्पना करो कि यह तुलसी भी उस अश्वत्थामन से प्रेम करती है। सब ठीक हो जाएगा," निरंजन ने अंदर आते हुए कहा।
दोनों महिलाएं एक-दूसरे को कसकर पकड़े हुए खड़ी हो गईं। "सर, आप कैसे हैं...?"
मैं भी शादी के लिए आया था।
"क्या उसने तुम्हें भी निमंत्रण भेजा था? जिस शादी को तुम पसंद नहीं करते, उसमें सबको क्यों आमंत्रित करोगे?"
"उसके बिना मेरी शादी कैसे होगी?"
"यह व्यक्ति महत्वपूर्ण क्यों है?"
"क्योंकि मेरा भाई दूल्हा है। इस बार मैं ही अपने चाचा की शादी रुकवाऊंगा। तब तो मैं अहमियत रखता हूं, है ना?" निरंजन ने कहा...
“समझ गई,” रंजनी चिल्लाई। “हमारे एमडी सर के भाई अश्वत्थामन हैं। अश्वत्थामन और कृष्णातुलसी एक-दूसरे से प्यार करते हैं। हमारे सर उनके प्यार में मदद कर रहे हैं। क्या यह सही है सर?”
"हे भगवान, आप तो बहुत बुद्धिमान हैं..." निरंजन ने ऊब भरे स्वर में कहा, "क्या उबाऊ है सर? अब आप तुलसी की शादी का अंत कैसे करेंगे?" प्रिया ने हैरानी से पूछा।
"आप इस आदमी से क्यों पूछ रहे हैं? यह तो बिल्कुल निर्दोष है। निर्देशक ने ही तो सब कुछ प्लान किया था," कृष्णातुलसी ने पलकें झपकाईं।
—-----

"ये तो मंदिर में होने वाली शादी की तरह है, चलो, हम दूल्हा-दुल्हन के सिर पर चार अक्षत छिड़केंगे और चले जाएंगे। क्या हम नहीं चाहते कि हमारे बच्चों की शादियां अच्छे से संपन्न हों?" कंचना ने कहा, और नल्लाथंबी ने सिर हिलाया और आगे बढ़ गई।

—---------

"क्या योजना है? मम्मी-पापा के बिना शादी?" निरंजन ने भौंहें चढ़ाते हुए पूछा।

"तुलसी भी तो यही कहती है, है ना? कि मेरी शादी मेरे सभी रिश्तेदारों के सामने होगी..." प्रिया ने उसे याद दिलाया, और कृष्णा तुलसी का चेहरा पीला पड़ गया।

"हाँ, यही मेरी इच्छा है..." उसने धीमी आवाज़ में कहा, कमरे के बाहर देखते हुए उसकी आँखें आश्चर्य से चौड़ी हो गईं। "देखो, मेरी इच्छा पूरी होने वाली है!" वह उत्साह से चिल्लाई।

"देखो, तुम्हारे मम्मी-पापा शादी के लिए आ गए हैं।"

निरंजन ने पीछे मुड़कर देखा और चौंक गई। "हे भगवान! मुझे नहीं पता अश्वथ की क्या योजना है," उसने कृष्णातुलसी की ओर देखते हुए और कंधे उचकाते हुए कहा।

मुझे भी नहीं पता, हमें बस इंतजार करके देखना होगा।

तभी कोई दौड़कर हॉल में आया और चिल्लाने लगा, "माँ, पिताजी, चाचा।"

"अरे, तुम क्यों चिल्ला रहे हो? तुम्हारा भाई कहाँ है?" नवनीथम ने पूछा। "तुम्हारा भाई भाग गया," उसने कहा।

"क्या गलत?"

मैंने आपसे पूछा था कि मेरा भाई कहाँ गया है, मुझे दिखाओ।

मदासामी झटपट आया और फोन छीन लिया। एक वीडियो चल रहा था। वेलन नारियल के बाग के पीछे खड़ा था। उसने हाथ हिलाते हुए कहा, "मेरे सभी रिश्तेदारों, कृपया मुझे माफ कर दीजिए, मुझे यह शादी पसंद नहीं है। क्योंकि मेरे पास इससे कहीं बेहतर जीवन है। मैं उस लड़की से क्यों प्यार करूं जिसके बारे में मैंने कभी सपने में भी नहीं सोचा था, मैं उसके साथ चला जाऊंगा। इस शादी को रोक दीजिए। कोई भी मुझे ढूंढने की कोशिश न करे।"

जब मदासामी ने फोन फेंका तो वह टुकड़े-टुकड़े हो गया।

"मुझे कुछ नहीं पता, नवनीथम, वह जगह दंगा स्थल है।"

"सब लोग थोड़ी देर के लिए शांत हो जाइए। मेरी बात सुनिए," निरंजन ने हाथ में माइक्रोफोन पकड़े हुए चिल्लाकर कहा।
"मैं कृष्णा तुलसी की कंपनी का मालिक हूं। तुलसी बहुत अच्छी महिला हैं। उन्हें ऐसी स्थिति में नहीं होना चाहिए। मैं अपने भाई से अनुरोध करता हूं कि वे उनकी शादी का इंतजाम करें।"
नल्लाथंबी, जो काफी देर से एक कोने में बैठकर उत्सुकता से परेड देख रहे थे, ने मंच पर निरंजन को देखा और चौंककर पूछा, "क्या?" और उठकर मंच पर आ गए।
जिस व्यक्ति ने उसे पकड़ा और दबाया, उसने कहा, "पिताजी, भाई, आप अपनी चाची के हस्ताक्षर के बिना कारोबार नहीं चला सकते, है ना? चुप रहो। हमारे लिए कारोबार महत्वपूर्ण है, ताकत नहीं।"
"क्या सच में? मेरा बेटा हमारी कंपनी में काम करने वाली किसी लड़की से शादी कर रहा है?" नल्लाथंबी ने हैरानी से कहा।
"क्या तुम ही वो नहीं हो जिसने बड़े आदमी होने के बजाय कृष्णा तुलसी के माता-पिता को गुमराह किया और उसकी अचानक शादी करवा दी? अब जो भी होगा हमें सहना पड़ेगा। अगर ठीक हो तो हम अपने बेटे की शादी देख सकते हैं। वरना हम उसे बांधकर सड़क पर घसीट देंगे," सुजाता ने कहा।
भाई ने भयभीत होकर उसकी ओर देखा। "क्या देख रही हो? तुम इतने समय से मेरी संपत्ति का आनंद ले रही हो, है ना? उस समय मैं और मेरे पति, बच्चे अलग हो चुके थे। अब तुम मेरे भाई के जीवन से खिलवाड़ कर रही हो। मैं यह बर्दाश्त नहीं करूँगा। कृष्ण भाई के भाई हैं। कृपया इस विवाह को विधिपूर्वक संपन्न कराओ।" भाई ने सिर झुकाया और बैठ गया।
अश्वत्थमन अचानक भूत की तरह मंच पर प्रकट हुआ। कृष्णातुलसी दुल्हन के कमरे से बाहर भागी और शादी के पलंग पर बैठ गई।
अश्वत्थामा ने अपनी इच्छा के अनुसार बगल में बैठे व्यक्ति की ओर देखा और वह रेशमी धोती में बेहद आकर्षक लग रहा था। उसकी मूंछें, दाढ़ी और बाल करीने से कटे हुए थे। उसने कृष्णातुलसी को मोहक अंदाज में आँख मारी।
"पापी! तुमने अपनी एक शरारती मुस्कान से मुझे हंसा दिया," कृष्णातुलसी ने सोचते हुए अपना सिर झुका लिया।

जब मदासामी अभी भी इस बात पर विचार कर रहे थे कि विवाह के लिए सहमत हों या नहीं, तभी अश्वत्थामन ने कृष्णातुलसी के गले में एक ताबीज बांध दिया।

—---------

कृष्णा तुलसी बाहर सभी से बातचीत कर रही थी जबकि अश्वत्थामन फूलों से सजी क्यारी पर इंतजार कर रहा था।

"प्यार की वजह से आपने ऐसा कौन सा सीन बनाया जो आपको पसंद नहीं आया? आपने वो लव फिल्म कैसे बनाई? अब आपको उसी डायरेक्टर से प्यार हो गया है और आपने उससे शादी कर ली है?"

मैंने कब कहा कि मुझे प्यार पसंद नहीं है? अगर आपने गलत समझा तो मैं क्या करूँ? आपको मुझसे आश्चर्य नहीं होना चाहिए, आपको उस अपशगुन से आश्चर्य होना चाहिए जिसने ऐसी योजना बनाई...

"वह प्रेम का शगुन है! तुम कोई योजना क्यों नहीं बनाते?"

"क्या अब तुम समझ गई हो कि प्रेम में भी शकुनी का कार्य महत्वपूर्ण है?" सुजाता ने पूछा, और कृष्णातुलसी ने सहमति में सिर हिलाया।

"बहन, आप घर पर मेरे मामले के बारे में कब बात करेंगी?" निरंजन ने धीरे से पूछा। "दो साल रहने दो," उसने बेपरवाही से हाथ हिलाया और उठ गई।

—-------

अश्वथ कमरे के अंदर फोन पर बात कर रहा था। "ठीक है, ठीक है, तुम्हारा काम हो गया। उसे रास्ते में कहीं उतार दो और घर जाओ, पैसे तुम्हारे खाते में जमा हो जाएंगे।"

"आप बात करने वाले कौन होते हो?"

"मोनिशा... मेरी परी," उसने आँख मारी।

"वो तुम्हारी फिल्म की हीरोइन है ना? आजकल उसके बारे में क्या चर्चा हो रही है?" कृष्णाथुलासी ने गुस्से से घूरते हुए कहा।

"हे कृष्ण, उसके बिना हमारी शादी नहीं हो पाती। उसी ने उस वेलन का रास्ता बदला और उसे वहां से ले गई।"

"क्या वह सच में ऐसा कर रही है? लेकिन वह ऐसा क्यों करेगी?"

"क्योंकि वो हीरोइन है। मैं डायरेक्टर हूं। अगर वो मेरे निर्देशों का पालन करती है, तो उसे पैसे मिलेंगे। बस इतना ही।"

"बस, और कुछ नहीं?"

"तुम्हारे साथ विवाह करने के बाद क्या मैं कुछ और चाह सकता हूँ? बस, माँ! देखो, कृष्ण, मेरा मूड अच्छा है। मूड खराब मत करो, इधर आओ।" उसने उसे पकड़कर अपने करीब खींच लिया।

अश्वत्थामा के गाल फड़क रहे थे। पंखुड़ियाँ सिमट गईं। उनकी आँखों में प्रेम झलक रहा था। जैसे ही मुड़ी हुई पंखुड़ियाँ कृष्णातुलसी के चेहरे के पास पहुँचीं, वे थोड़ी सी फैल गईं, और उनके चेहरे पर झिझक, संकोच और उससे भी बढ़कर जिज्ञासा के भाव दिखाई दिए। दोनों होंठ एक-दूसरे से सट गए। पंखुड़ियों का यह स्पर्श बिल्ली के चूहे को काटने की गति से हुआ। कृष्णातुलसी अब इस चुंबन के प्रेम में पूरी तरह से डूब चुकी थी... प्रेम में... शकुनी के प्रति प्रेम में।

*******समापन*******

sjeet